

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : चैत्र-वैशाख, संवत् 2074
अप्रैल 2017

ओ३म

अंक 139, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)



हुतात्मा महाशय राजपाल

“जीवेम शरदः शतम् - भूयश्च शरदः शताब्”



रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, कर्मठ नेता, समाजसेवी
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) को
94वाँ जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

विगत दिनों आर्य समाज गोंडपारा बिलासपुर में सम्पन्न वेद महोत्सव एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ व महर्षि दयानन्द बोध दिवस की चित्रमय झलकियाँ

वेद महोत्सव एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ

शुक्रवार १३ जनवरी से रविवार १५ जनवरी २०१९

वेदों में ईश्वर, देवी देवता और भगवान आदि में क्या अंतर है और किसको उद्धारना है ?





अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,
राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,९९९

दयानन्दाब्द - १९४

: प्रधान सम्पादक :

आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रधान सभा

(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :

आर्य दीनानाथ वर्मा

मंत्री सभा

(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :

श्री जोगीराम आर्य

कोषाध्यक्ष सभा

(मो. ९९७७१५२११९)

★

: व्यवस्थापक :

श्री दिलीप आर्य

उपमंत्री (कार्यालय) सभा

मो. ९६३०८०९२५७

★

: सम्पादक :

आचार्य कर्मवीर

मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :

श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००९

फोन : (०७८८) ४०३०९७२

फैक्स नं. : ०७८८-४०१९३४२ ;

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।

वर्ष - १२, अंक १०

ओ३म्

मास/सन् - अप्रैल २०१७

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निःसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सन्नसन्नकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

		पृष्ठ क्र.
१. उषाएँ खिलीं, तम दूर हुआ	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२. आखिर कैसी पीढ़ी बना रहे हम?	आचार्य कर्मवीर	०५
३. ईश्वर वेद, धर्म जोड़ता है	आचार्य आर्यनरेश	०८
मनुष्यकृत मजहब तोड़ता है.		
४. प्रभु मिलन का स्थान	नरेन्द्र आहूजा	१०
५. राज्य व शासन की उन्नति का मार्ग : वेदज्ञान	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१२
६. व्यक्तित्व निर्माण	आनन्द प्रकाश गुप्त	१५
७. कविता - अजन्मी बेटी की गुहार	स्व. हरिसाहू	१८
८. कविता-अस्तु जियो मर्यादित जीव	दयाशंकर गोयल	१९
९. महात्मा हंसराज जन्म दिवस पर विशेष	हरबंशलाल कपूर	१९
१०. आदर्श व्यक्तित्व के प्रतीक : श्रीराम		२०
११. मनुष्यों का धर्म सत्याचार है जो सबका एक ही है.	मनमोहन कुमार आर्य	२१
१२. ग्रीष्मऋतु चर्या	रसवैद्य डॉ. प्रेमदत्त पाण्डेय	२४
१३. हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान गाथा	विश्वनाथ	२६
१४. होमियोपैथी से कैंसर का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१५. समाचार दर्पण		३०

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें

Website : <http://www.cgaryapratinidhisabha.com>

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं हैं ।



उषाएँ खिलीं, तम दूर हुआ



भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

एता उत्थाः प्रत्यदृशन् पुरस्ताद्, ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः ।

अजीजनन्सूर्यं यज्ञमग्निम्, अपाचीनं तमो अगाधजुष्टम् ॥ ऋग्. ७.७८.३

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः । देवता उषाः । छन्दः त्रिष्टुप् ।

- (एताःउ) ये (त्याः) वे (ज्योतिः) ज्योति को (यच्छन्तीः) प्रदान करती हुई (विभातीः) जगमगाती (उषसः) उषाएँ (पुरस्तात्) सामने (प्रत्यदृशन्) दिखाई दे रही है। (इन्होंने) (सूर्य) सूर्य को (यज्ञं) यज्ञ को (अग्निं) अग्नि को (अजीजनन्) उत्पन्न कर दिया है। (अजुष्टं) अप्रिय (तमः) तमस् (अपाचीनम् अगात्) अपगत हो गया है।

यह देखो, थिरकती-जगमगाती उषाएँ सामने दिखाई दे रही है। न केवल ये स्वयं ज्योति से भासमान है, किन्तु अन्धकारवृत् जगत् को ज्योति प्रदान भी कर रही है, जिस ज्योति से मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, लता, फूल, पत्ती सब प्राणवान् हो उठे हैं। इन प्रकाशवती उषाओं ने सूर्य को जन्म दिया है। रक्तिम आभा से परिपूर्ण आदित्य देव शनैः-शनैः क्षितिज से ऊपर झांक रहे हैं। यज्ञशालाओं में अग्निहोत्र की अग्नियाँ प्रज्वलित हो गई हैं। सम्पूर्ण भूमि यज्ञमय हो उठी है। निशा का अप्रिय अन्धकार धराधाम से निःशेष हो गया है।

प्रकृति में हंसती-खेलती, अट्टाहस करती इन उषाओं के समान आज मेरे मनोमय आकाश में भी दिव्य उषाओं ने पदार्पण किया है। ये उषाएँ आत्म-ज्योति की उषाएँ हैं, जिनके उद्भासित होते ही, मेरे शरीर के चक्षु, श्रोत्र, प्राण आदि सब लोक अन्त-प्रकाश से प्रकाशमान हो उठे हैं। इन आत्मिक उषा के खिलते ही मेरे अन्दर परमात्म सूर्य का आविर्भाव प्रारम्भ हो गया है। यह लो, अब मानस-गगन में प्रभु आकाश का पूर्ण सूर्य उदित हो गया है। मेरे हृदय की यज्ञशाला में संकल्प की अग्नियाँ प्रज्वलित हो रही हैं। प्रभु-ध्यान का मानस-यज्ञ प्रवृत्त हो गया है। सत्त्व गुण के तमोगुण का सब कलुष, सब मालिन्य, सब पाप, सब कल्मय, सब दुरित अपगत हो गया है। मैं दिव्य आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। प्रभु मेरे, यह दिव्य उषाओं का आगमन, यह दिव्य सूर्योदय, यह दिव्य अग्नियों का जन्म, यह दिव्य यज्ञ मेरे अंदर सदा के लिए स्थिर हो जाए। मैं इन उषाओं का ऋणी हूँ, इन्होंने मुझे मनुष्य से देव बना दिया है।

संस्कृतार्थः- १. प्रत्यदृशन्, प्रत्यदृश्यन्त। प्रति दृशिर् प्रेक्षण। छन्दस रूप। २. जुषी प्रीतिसेवनयोः। न जुष्टम् अजुष्टम्। ३. अप अञ्चति इति अपाचीनम्। अप अञ्चु गतिपूजनयोः।



आखिर कैसी पीढ़ी बना रहे हम?

लोग शिकायत करते हैं कि युवा पीढ़ी गलत रास्ते पर चल रही है। वह समाज विरोधी कार्यों में जुटी है बड़े-बूढ़ों के दिस्वाये रास्ते पर नहीं चलती। परन्तु सच्चाई यह है कि बुजुर्ग पीढ़ी के पास देने के लिए कुछ है ही नहीं। संस्कार तो वही दे सकता है जो अपने आप सही रास्ते पर चल रहा हो। संस्कार अपने आप तो बन नहीं जाते। एक शरीफ और समझदार पिता को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि उसके बेटे-बेटियाँ भी अनिवार्यतः शरीफ और समझदार ही बनेंगे। सन्तान पर संस्कार डालने के लिए केवल शरीफ, ईमानदार और मेहनती होना ही काफी नहीं बल्कि उन श्रेष्ठताओं के प्रति प्रतिबद्ध होना भी बहुत जरूरी है जिनका हम प्रति फलन देखना चाहते हैं। बहती धारा में बह जाने वाले लोग अपनी सन्तान को संस्कार नहीं दे सकते। केवल औपचारिकताएँ निभाने वाले और परम्परा का निर्वाह करने वाले लोग भी अपनी सन्तानों को कुछ नहीं दे सकते। जो लोग शराफत, ईमानदारी और विवेकशीलता के साथ-साथ धारा में दृढ़तापूर्वक स्वड़े रहने का भी दम रखते हैं वह अपनी सन्तानों को कुछ दे पाते हैं। अपने सिद्धान्तों पर टिका रहने वाला और उनके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने की हिम्मत रखने वाला व्यक्ति ही किसी का दिशानिर्देश कर सकता है। किसी शरीफ शालीन और सौम्य व्यक्ति के लड़के का शराबी-कबाबी और बेईमान बन जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं। केवल सौजन्य और सद्भाव से ही तो समाज या परिवार का उत्थान नहीं होता। इन गुणों का आग्रह भी तो होना चाहिए। इनके लिए समर्पित भाव भी तो चाहिए और इन पर अडिग रहने की दृढ़ता भी तो चाहिए। यदि धारा के विपरीत चलने की क्षमता नहीं हो तो कम से कम दृढ़ता से स्वड़े रहने का दम तो होना चाहिए।

भले परिवारों की स्त्रियाँ यद्यपि शराबखोरी को बुरा मानती हैं परन्तु अपने घरों पर और मित्रों द्वारा आयोजित पार्टियों में वे इसका विरोध नहीं करती। वे जुए को पसन्द नहीं करती परन्तु अपने घरों में जमाने वाली महफिलों में चाय-कॉफी परोसती हैं। हमारे बहुत से सज्जन पुरुष अपने बच्चों की शराबखोरी और धूम्रपान आदि की प्रवृत्ति को यह कहकर नजर-अन्दाज कर देते हैं कि आजकल यह सब चलता ही है यह तो ऊँची सोसाइटी में फैशन सा बन गया है। बड़े शरीफ और कुलीन माने जाने वाले लोगों की बरातों में युवा वर्ग शराबखोरी को न केवल गरिमा-मण्डित भी करता है बल्कि शराब के

नशे में गली बाजारों में नाचता हुआ नाना प्रकार की भोंड़ी हरकतें भी करता है। आधुनिकता की झोक में शास्त्रविधि और शास्त्रसम्मत मन्त्रोच्चार का जिस प्रकार मजाक उड़ाते हैं, उससे हमारा सिर शर्म से झुक जाता है, परन्तु प्रश्न उठता है कि शर्म से सिर झुका लेने मात्र से ही क्या समस्या हल हो सकती है ? केवल शर्मसार होने वाले लोग अपनी सन्तान को कोई संस्कार नहीं दे सकते।

स्वदेशी भाषा को ही ले लीजिए। हमारा सफेदपोश वर्ग भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय जीवन मूल्यों के ह्रास का रोना तो नित्य प्रति रोता है परन्तु अपने चरित्र की उस विसंगति पर जरा भी ध्यान नहीं देता जो राष्ट्रीय साहित्य और कला के उत्थान की बढ़ी-चढ़ी बहसों के साथ-साथ उसे स्वदेशी संस्कृति की वाहिका भाषा को कभी भी न अपनाने की जिद पर कायम रखती है। उन्नीसवीं शताब्दी के महान् समाज सुधारकों द्वारा संस्थापित सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाओं के बुजुर्ग कर्णधार राष्ट्रभाषा को राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय जीवन का माध्यम न बनने देने के अघोषित षड्यंत्र में आपाद-मस्तक डूबे रहे और ये ही वे लोग हैं जो भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों के लुप्त होते चले जाने का रोना रोते नहीं थकते। नन्हें-नन्हें शिशुओं के कन्धों पर अंग्रेजी में लिखी परिचय परिचयों टांगने वाले, पब्लिक स्कूलों के कर्ता-धर्ता अपनी सन्तानों को यही संस्कार दे सकते हैं कि इस देश की अपनी कोई भाषा नहीं है और ज्ञान तथा विज्ञान में ही नहीं बल्कि दैनिक जीवन और प्रतिदिन के कार्यालयीन काम-काज में भी स्वदेशी भाषा नहीं चल सकती। आप अपने स्वदेशी सिर को काट कर उसके स्थान पर विदेशी सिर प्रत्यारोपित कर रहे हैं और फिर शिकायत कर रहे हैं कि हमारा मौलिक चिन्तन समाप्त हो रहा है तथा साहित्य और कला में नए कीर्तिमान नहीं बन रहे हैं। उधार की भाषा से काम चलाने वाले हम लोग नई पीढ़ी को मला क्या संस्कार दे सकते हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के समूचे कालखण्ड में हमने अपनी सन्तानों को बड़ी निर्लज्जता से पराधीनता और परमुखापेक्षिता का संस्कार दिया है। हमारे यहाँ दासता की मानसिकता खूब फली-फूली है। हम शिकायत करते हैं कि युवा पीढ़ी में देश-प्रेम नाम की कोई चीज नहीं रही परन्तु क्या हम ने कभी यह सोचा है कि हमने आज तक देश का कोई स्वरूप ही अपने बच्चों के सामने नहीं रखा। हमारी नई पीढ़ी को जब पता ही नहीं कि देश होता क्या है तो वह प्रेम किससे करें ? क्या भारत माता कोई तस्वीर है जिसके सामने धूप जला देने मात्र से देशभक्ति का कार्य सम्पन्न हो जाएगा। भारत माता कोई मिट्टी की मूर्ति भी नहीं कि जिस को किए गए माल्यापिण से देश भक्ति का दायित्व निभ जाएगा। भारत माता को जानने के लिए भारत का इतिहास, उसकी परम्परा तथा उसके वाङ्मय को जानना-पहचानना और उसके साथ एक सुर होकर जीने का प्रयत्न करना परम आवश्यक है। अतीत के गौरवमय पृष्ठ पढ़ कर अपना मनोबल ऊंचा करना, वर्तमान में कर्मठता का विकास करना और भविष्य के लिए चिन्तनशील तथा महत्वाकांक्षी बनना ही सच्ची देशभक्ति है। भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न आधुनिक भारत ही सम्पूर्ण भारत नहीं है। रामायण और महाभारत भी एक जीवन्त भारत हमारे सामने लाती है। इनसे भी पहले का, वेदों और उपनिषदों का युग आगे आने वाली बीसियों शताब्दियों पर ज्ञान का प्रकाश फैकता दिखवाई देता है। महाकाव्यों के बाद युग अपनी भीतरी शक्तियों को परत दर परत खोलता और धर्म, अध्यात्म, तत्त्वचिन्तन, आयुर्विज्ञान, गणित, ज्योतिष, साहित्य, कला आदि का हमारा मार्ग प्रशस्त करता दिखाई देता है। हमारे इतिहास का ऐसा कोई कालखण्ड नहीं है जो हमें बहुत कुछ नहीं दे जाता है। क्या हमने अपने बच्चों में इस सब को जानने की लगन पैदा की है। क्या इस सब को जानने का कोई माध्यम हमने अपनी युवा पीढ़ी को मुहैया कराया है ? शिशु-कक्षाओं से लेकर उच्चतम शिक्षा तक किसी विदेशी माध्यम से पढ़ने वाला

बच्चा क्या भारत के इस विराट् रूप को समझ सकेगा ? हमारी बुजुर्ग पीढ़ी ने तो हीनतावश पश्चिमी संस्कृति और अंग्रेजी भाषा का ही गुणानुवाद किया है और भारत को जानने समझने का उससे न प्रयत्न किया है और न कोई ऐसा साधन ही तैयार किया है जिसके माध्यम से वह शाश्वत और जीवन्त भारत तक पहुंच पाती है। उसने भारत को या तो हिन्दोस्तान के रूप में या फिर इण्डिया के आयातित नाम से जाना है। उसने इस सुजलां-सुफलां भूमि को बहुबलधारिणी और तारिणी माता के रूप में तो कभी स्वीकार ही नहीं किया। उसकी सारी शक्तियाँ तो अंग्रेजी और अंग्रेजियत के रहस्यों को समझने में ही चुक गई हैं।

लोग कहते हैं जनता को साक्षर बनाओ, शिक्षित करो और उसके मन तथा मस्तिष्क को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करो परन्तु जो घना अन्धेरा हम तथाकथित शिक्षितों और बुद्धिजीवियों ने फैला रखा है उसे कौन दूर करेगा। हमारे समाज में बच्चों को इन्जीनियर और डाक्टर बनाने की होड़ लगी है परन्तु वे सेवाप्रती और लोकहितैषी कैसे बने इस पर तो किसी स्तर पर भी विचार नहीं हुआ। आज पेट पालने के धंधे की सिरवलाई को ही शिक्षा मानलिया गया है और इस रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर अरबों रूपया स्वर्च हो रहा है परन्तु बच्चों के भावलोक को समृद्ध और परिष्कृत बनाने की ओर किसी का ध्यान नहीं। हम पढ़-लिख कर भी जड़ के जड़ ही रह जाते हैं। बोध की औषधि कौन देगा। हमने उन छिद्रों को पूरी तरह बन्द कर रखा है जिनसे प्रकाश की धाराएँ भीतर आती थीं। हमने अपनी सन्तानों से शिक्षित होने का माध्यम ही छीनलिया है तो वे पढ़ेगी क्या ? स्कूली संस्कार केवल अंग्रेजी को मान्यता देता है और यह अंग्रेजी भी हमारे लिए साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान की नहीं, फैशन, झूठी प्रतिष्ठा, मानसिक विलास और दफ्तरी काम-काज की भाषा ही बनकर रह गई है। हम भारतीय वाङ्मय केमर्म तक पहुँचने के लिए छटपटाते जरूर हैं परन्तु इसके माध्यम को पंगु बनाने वाले भी हम ही हैं।

आज राष्ट्र देवता की प्रतिमा खंडित हो रही है और हम हैं कि लम्बी चादर तान कर सोये पड़े हैं। मध्ययुग के हमलावरों ने मन्दिर ढहाकर उन पर मस्जिदें खड़ी कीं। उन्होंने एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में धर्म-पुस्तक लेकर हमारा धर्म परिवर्तन किया। हमारे पूर्वजों ने एक-एक कदम पर सशस्त्र प्रतिरोध किया और राष्ट्रीय अस्मिता को बचाये रखा परन्तु आधुनिक युग में हमें जो चुनौती मिली है उसे हम समझ ही नहीं पाये हैं। प्रगति, विकास तथा आधुनिकता का लबादा ओढ़ कर जो दानव हमारे सामने आया है उसे न केवल हमने अपनाया ही है बल्कि उसके घिनौने इरादों को सफल बनाने में योग भी दिया है। आधुनिक युग के आक्रान्ताओं ने हमारा सब कुछ लूट लेने का प्रयत्न किया और वे इसमें बहुत हद तक सफल हुए। हमारे महान् जननायकों ने उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में समाज सुधार और शिक्षा के लिए जो प्रयत्न किया बाद में अर्थात् स्वाधीनता प्राप्ति के बाद उन्हीं के श्रद्धालु अनुयाइयों ने उसे निरस्त कर दिया। स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष बार-बार जन्म नहीं लेते। आज इस देश में मैकालेवाद का बोल-बाला है। ज्ञान-विज्ञान के नाम पर हम पश्चिम का कचरा बटोर रहे हैं। सोचते हैं शायद सीमेण्ट, लोहे और स्विज तेल के उत्पादन से भारत उन्नत हो जाएगा। ठीक है यह सब भी चाहिए परन्तु राष्ट्र केवल इन्हीं चीजों पर जिनदा नहीं रहते। दीर्घजीवी और शक्तिशाली बनने के लिए संस्कार सम्पन्न और उच्चतम मनोबल की सन्तानों की आवश्यकता होती है, अच्छा है हम इसी दिशा में प्रयत्न करें जिससे पश्चाताप की अन्तर्ज्वाला से अपने आपको आगे के लिए बचा सकें।

॥ नाट्यः पठ्याविद्यतेऽयनाय ॥

- आचार्य कर्मवीर



ईश्वर, वेद, धर्म जोड़ता है, मनुष्यकृत मजहब तोड़ता है

मानवतावाद

- आचार्य आर्यनरेश, वैदिक गवेषक

प्रभु सारे संसार का पिता है अतः वेद में कहीं भी प्रान्तवाद या देशवाद का झगड़ा नहीं है। क्योंकि वेद संसार की उत्पत्ति में सबसे पहले रचा गया ग्रन्थ है अतः इसमें कहीं भी राजा-रानी, देशों के झगड़े, जातियों के झगड़े अथवा छुआ-छूत की वर्तमान घटनाओं का कोई वर्णन नहीं है। इसी कारण सदा से संसार के लोग इसे अपना धर्म मानते चले आए हैं और आज भी जर्मन, पोलैण्ड, चिली, अमेरिका आदि देशों के लोग वेद से यज्ञ व योग के आविष्कार कर रहे हैं। वर्तमान में वैज्ञानिक वेदों से चिकित्सा, सृष्टि रचना के कला-कौशल एवं गणित को भी विकसित कर रहे हैं। वेदों की भाषा वैदिक संस्कृत भी संसार की प्राचीनतम भाषा है। वह किसी भी देश की या जाति की भाषा नहीं। इससे भी परमात्मा द्वारा सबसे एक सा व्यवहार करने के कारण न्यायकारी सिद्ध होता है।

वैदिक 'ईश्वर' एक निराकार सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, चेतन स्वरूप सत्ता है। वह कहीं ऊपर आकाश या नीचे पाताल में नहीं है। संसार के कण-कण में निराकार शक्ति के रूप में भरा हुआ है। उसे प्रत्येक व्यक्ति दया, अहिंसा, पवित्रता तथा समानता की मानवता युक्त भावना से अपने हृदय में अनुभव कर सकता है। जो प्रभु के प्राणियों से यथा-योग्य न्यायपूर्वक व्यवहार करता है तथा सब प्राणियों से यथायोग्य प्यार करता है वहीं प्रभु का सच्चा पुत्र है। उसे ही हृदय में प्रभु का सच्चा प्यार व आनन्द मिलता है। मानवता का उपदेश करते हुए प्रभु वेद में कहता है-

संगच्छध्वं, संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

समानी प्रपा सह वो अन्न भागः ॥

अज्येष्ठासो अकनिष्ठासः। अन्यो अन्यमभिर्हयत।

सखा सखायमतरद् विषूचोः।

वयं स्याम पतयो रयीणाम्।

धियो यो नः प्रचोदयात्। शंयोरभिस्रवन्तु नः।

ब्राह्मणो अस्य मुखमासीत्।

ऋग्वेद, यजुर्वेद व सामवेद के इन मन्त्रों में सर्वत्र समानता का उपदेश किया गया। प्रभु कहता है "त्वं हि न पिता वसो त्वं माता शतक्रतो" मैं तुम सबका एक समान माता व पिता हूँ। तुम सब मेरे पुत्र व पुत्रियाँ सदा एक विचार से मिलकर चलो। तुम्हारे खाने पीने के स्थान एक ही हों। तुम में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है। परस्पर सखा तथा भाई-भाई बन कर रहो। जैसे गाय बछड़े से प्यार करती है वैसे ही परस्पर सदा प्यार करो। अकेले नहीं सभी धनवान् व बुद्धिमान बनो। 'विश्वानि दुरितानि परासुव' अर्थात् सब प्रकार के भेदभाव, ईर्ष्या, द्वेष, ऊँच-नीच तथा चोरी, जुआ, मांस-शराब आदि बुराईयों को छोड़कर 'सत्सि बर्हिषि' तुम मुझे अपने हृदय मन्दिर स्थित आत्मा में पा सकते हो। वेद में कहीं भी जन्म से जातिवाद व छुआछूत को स्थान नहीं है। परन्तु ठीक इस से विपरीत कुरान सूरः आयत=६०:१, ५८:१९, २२:, ८:१२-१७, ९:५, ९:१११ में लिखा है कि गैर मुसलमानों को मित्र बनाओ, मुस्लिम मजहब न माने तो हाथ पैर गर्दन काटो जिहाद न करो।

तर्क, विज्ञान व मानवतावादी विचार होने के कारण विश्व के सभी लोग व देश वेद को मानते हैं। श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु गोविन्द सिंह जी आदि के वचन हैं :- सुणयै शासन सिमत वेद। 'नानक भगता सदा विगास सुणयै दुःख पाप का नास' अर्थात् वेद शास्त्र के श्रवण व तद् अनुसार आचरण से व्यक्ति पापों का नाश कर सकता है। 'जिन्ना वेद पढ़े सो वेदी कहाये तिन धर्म दे काज नीके चलाए' अर्थात् वेद पढ़ने वालों को वेदी कहा गया और उन्होंने सर्वहित

धर्म कार्य किए। “असंख्य ग्रन्थ मुख वेद पाठ” संसार के असंख्य ग्रन्थों में वेद मुख्य है।

ठीक इसी तरह वेद की महिमा गाते ‘अहलेहदीस’ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध लेखक श्री मौलाना सन्ना उल्ला अपनी पुस्तक ‘तफसीरी सवाई’ में लिखते हैं कि वेद अल्लाह की वाणी है। कुरान शरीफ में वेद को अल किताब के नाम से कहा गया है। मुहम्मद साहब से लगभग २४०० वर्ष पूर्व प्रसिद्ध कवि लगी बिन अख्तर बिन तुरफा लिखते हैं :- “अया मुबारक अल अर्जेयुशत्रीहा मिन अल हिन्द। य हुवा अलमुस्मान युजूर” अर्थात् हे हिन्दुस्तान की भूमि तुझे मुबारक है। जहां पर अल्लाह ने चार पैगम्बरों अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा के द्वारा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद को प्रकाशित किया। अल्लाह का आदेश है कि इस पर चलने से सबकी भलाई है। परन्तु शर्म की बात है कि आज के मुस्लमान कुरान १:॥ कुरान के आदेश से भारत पर निरन्तर जिहादी हमले कर रहे हैं। गत दिनों अलकायदा ने पत्रों में धक्ता दिया था, जब तक भारत सरकार कश्मीर

से कब्जा नहीं छोड़ती तब तक।

महात्मा बुद्ध के प्रसिद्ध ग्रन्थ सुन्निपात - २९२ में कहते हैं :- वदै: “समेत्य धर्म नोच्चावच” अर्थात् वेद से ही धर्म की शोभा व धर्म का प्रकाश होता है। जैनियों के प्रसिद्ध ग्रन्थ भूवल्लय अध्याय ६ में कहा है “वेद ही अनादि ईश शब्द है” सर विलियम जोन्स तथा फ्रांसीसी विद्वान लुई जेकालिएट अपनी पुस्तक “बाईबिल इन इण्डिया” में वेदों को ईश्वर की वाणी तथा मानवीय सभ्यता का आधार मानते हैं। मैक्समूलर भी वेदों प्राचीनतम संस्कृति का ग्रन्थ मानता है। “मिनिसन बुक, ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड” के पृष्ठ २०६ पर लिखा है :- “दि आल्डेस्ट मेजर फारमल रिलिजन इज वैदिक” अर्थात् संसार का सबसे पुराना आचार का धर्म ग्रन्थ वेद है। लगभग दो अरब पुराने इस वेद धर्म ग्रन्थ में २०४१६ मन्त्र हैं। वेद ईश्वर के द्वारा सभी मानवों के हित में रचे होने के कारण इसकी प्रत्येक शिक्षा भाई-चारा, मित्रता, एकता तथा मानवता की प्रेरणा देती है।

पता - उद्गीय साधना स्थली, हिमाचल प्रदेश

“मैं हूँ दयानन्द”

दयानन्द को मेरा बार-बार नमन है।
प्राणों से प्यारा धर्म और वतन है।
वेदों के पथपर सबको चलना पड़ेगा।
वन्दे मातरम् सबको कहना पड़ेगा ॥
दया के पुजारी दयानन्द हमारे।
दुनियाँ में जीते रहे प्रभु के सहारे ॥
जब तक सूरज चांद रहेगा।
तब तक दयानन्द का नाम रहेगा।
ऋषिवर को मैं “सोम” नमन करता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर जीता हूँ मरता हूँ ॥

रचयिता : डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री,
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा)

“तिरंगा”

लहर-लहर लहराता अपना तिरंगा
हर जन का तन-मन हर्षाता तिरंगा
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
भारत माँ की अमर शान तिरंगा
शौर्य - वीरता की पहचान तिरंगा
तीन रंगों के बीच चक्र वीरता का
शीश हिमालय मुकुट तिरंगा ॥
अद्भुत केसरिया-श्वेत-हरा तिरंगा
तीन रंग से मिलकर बना तिरंगा
राष्ट्रधर्म पर मरमिटने वालों का,
आन-मान-शान-अभिमान तिरंगा ॥

रचयिता : मुकेश कुमार “ऋषि वर्मा”,
गाँव रिहावली, डाक तारौली, फतेहाबाद-आगरा-२८३१११

प्रभु मिलन का स्थान

— नरेन्द्र आहुजा 'विवेक'

मनुष्य जीवन भर ईश्वर की खोज में मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, डेरों और जाने कहाँ कहाँ घूमता फिरता है। पूरा का पूरा जीवन यूँ ही तलाश में निकल जाता है समय लौट कर नहीं आता परन्तु प्रभु मिलन की आस अधूरी ही रह जाती है। कई बार तो बड़े से बड़ा आस्तिक व्यक्ति भी निराशावादी होकर नास्तिक बन जाता है। यह सोचकर कि मैं बेकार किसी मृगतृष्णा के पीछे भाग रहा हूँ ईश्वर का तो अस्तित्व ही नहीं है।

अंत में यही प्रश्न उठता है मनुष्य प्रभु से कहाँ मिल सकता है। आखिर वह कौन सा स्थान है जहाँ जीवात्मा परमात्मा से मिल सकता है। यदि आप किसी भी व्यक्ति विशेष से मिलना चाहते हैं तो आपको उसका सही पता होना चाहिए। फिर आपको उस स्थान तक जाने का रास्ता भी मालूम होना चाहिए। केवल पता और रास्ते का ज्ञान ही काफी नहीं है अपितु आपको स्वयं उस रास्ते पर चलकर उस स्थान पर पहुँचना भी होगा तभी आप उस व्यक्ति विशेष से मिल सकते हैं।

अब यदि आप ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो आपको ईश्वर का पता मालूम होना चाहिए कि इस सृष्टि का निर्माता, पालनकर्ता, संहारक व न्यायकर्ता परमपिता परमेश्वर रहता कहाँ है। न! केवल आपको ईश्वर के सच्चे स्वरूप और स्थान का ज्ञान आवश्यक है अपितु आपको उस स्थान तक पहुँचाने के रास्ते का ज्ञान भी आवश्यक है। यदि हमें किसी का पता तो मालूम हो लेकिन वहाँ तक पहुँचने के मार्ग का पता ना हो तो भी हम उस तक नहीं पहुँच सकते। ईश्वर का पता यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में प्रथम मंत्र बड़े स्पष्ट तरीके से दिया गया है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन धुन्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥

वह परमपिता परमेश्वर जगत्यां जगत् अर्थात् जगत् को अंदर बाहर हर ओर से आच्छादित किए हुए हैं। आर्यसमाज के दूसरे नियम में महर्षि दयानन्द ने बड़े स्पष्ट

रूप से ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए ईश्वर को निराकार सर्वव्यापी लिखा है अर्थात् परमपिता परमेश्वर सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता हम ईश्वर की अनुभूति क्यों नहीं कर पाते। या फिर ईश्वर के सर्वव्यापी होने में कोई संशय है। प्रभु के सर्वव्यापी होने की बात से इससे स्पष्ट है कि ईश्वर सृष्टि का निर्माता, पालनकर्ता, संहारक व न्यायकर्ता है और यह तभी संभव है जब परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी होकर सृष्टि के प्रत्येक स्थान कण-कण में विद्यमान हो। क्योंकि कोई भी कार्यकर्ता के बिना संभव नहीं है और कर्ता हर उस स्थान पर मौजूद हो तभी कार्य का संपादन कर सकता है।

फिर प्रश्न उठता है कि ईश्वर सर्वव्यापी है तो हमें दिखाई नहीं देता। हम उसकी आवाज क्यों सुन सकते। आंखों में देख सकते। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों की अपनी सीमायें हैं। हम कानों से सुन सकते हैं पर देख नहीं सकते। आंखों से देख सकते हैं पर सुन नहीं सकते। हाथों से छूकर महसूस कर सकते हैं परन्तु देख या सुन नहीं सकते। इन ज्ञानेन्द्रियों की सीमा केवल भौतिक जगत की वस्तुओं तक है। ईश्वर को देखना सुनना अनुभव करना मनुष्य शरीर की ज्ञानेन्द्रियों से संभव नहीं है।

प्रश्न फिर वहीं आकर खड़ा हो जाता है कि हम ईश्वर से कैसे मिल सकते हैं। इसके उत्तर के लिए पहले हमें स्वयं को समझना होगा। आखिर हम कौन हैं। मनुष्य भौतिक रूप से दिखाई देने वाला शरीर या फिर इस शरीर को उपयोग में लाना वाला शरीरी जीव या आत्मा है। न्यायकर्ता परमेश्वर प्रत्येक जीव को उसके पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर न्याय तुला पर तोलते हुए सद्कर्मों के पुरस्कार स्वरूप यह अनमोल मानव तम प्रदान करते हैं। मानव तन को ही अनमोल इसलिए कहा कि क्योंकि यही एक योनि है जो कि भोग योनि के साथ साथ कर्म योनि भी है। हमारे कर्म ही ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में हमारी नियति या प्रारब्ध का कारण होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि मानव शरीर तो हमारे

उपयोग वा उपभोग के लिए ईश्वर प्रदत्त एक साधन मात्र है। हम यह भौतिक शरीर नहीं हैं। पांच तत्त्वों से मिलकर बना यह शरीर तो मरणधर्म है जबकि हम अर्थात् देही, शरीरी वा आत्मा तो अजर-अमर अनिवाशी हैं जो कि योगीराज श्रीकृष्ण के गीता उपदेश से स्पष्ट है -

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥

अब इससे स्पष्ट हो गया कि यदि हम अर्थात् आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो आत्मा और परमात्मा का एक स्थान पर होना आवश्यक है। अब आत्मा इस मानव शरीर को छोड़कर बाहर निकल कर परमात्मा से मिलने नहीं जाएगी क्योंकि आत्मा के शरीर छोड़ देने, देही के देह से निकल जाने इसी वियोग का नाम ही तो मृत्यु है। परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी होने के कारण अति सूक्ष्म रूप में हम सभी की आत्मा में विद्यमान है गीता उपदेश में योगेश्वर कृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा है - “ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति” अर्थात् सर्वव्यापक सर्वन्तर्यामी परमेश्वर सबके अन्दर विद्यमान है। ईश्वर के सर्वव्यापी गुण की स्थापना यजुर्वेद (४०/५) में की है “तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य

बाह्यतः” अर्थात् ईश्वर सबके भीतर बाहर विद्यमान है क्योंकि वह सर्वव्यापी है। हम ईश्वर के अत्यन्त निकट हैं। आँख से भौंह की दूरी अधिक है पर आत्मा की परमात्मा से कोई दूरी नहीं। फिर भी इस परमात्मा का साक्षात्कार नहीं कर पाते तो इसमें हमारा तो दोष है। अपने अंदर बैठे अन्तर्यामी परमेश्वर को ढूँढ़ने के लिए हम बाहर व्यर्थ धक्के खाते रहते हैं। अपने अंदर झाँक कर देखने का समय ही नहीं निकाल पाते। इसका कारण हमारी रूचि ईश्वर में नहीं अपितु ईश्वर प्रदत्त प्रकृति के दोहन और ऐश्वर्यों के भोग में अधिक रहती है। हम बाहरी भोग विलासिता में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हमारे पास अपने ही अंदर बैठे अन्तर्यामी ईश्वर के लिए कोई समय ही नहीं है। शायद इसीलिये हमारे इतने निकट होने के बावजूद ईश्वर से हम अत्यंत दूर होते हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पांचवे मंत्र में भी यही भाव है तद्दूरे तद्वन्तिके अर्थात् ईश्वर हमारे निकट है पर हम उससे दूर हैं। हमारी ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, अज्ञानता, अशिक्षा, भौतिक सुख-सम्पदा की लालसा आदि कुत्सित तामसी वृत्तियाँ ही हमें ईश्वर से दूर करती हैं। ईश्वर से मिलने का एकमात्र स्थान हमारा अन्तःकरण ही है अपनी आत्मा में ही हम प्रभु को मिल सकते हैं। पता: १२२/२८, फरीदाबाद (उ.प्र.)

कल्पना के बाँध का बसन्त और पतझर

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ।

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार ॥

भावार्थ :- जीवन को सचमुच में यदि दुर्घटनाओं की जञ्जीर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ? मनुष्य सोचता कुछ है, और होता कुछ और ही है ? दैव का विधान बहुत विचित्र है। महाकवि भारवि ने अपने शब्दों में इसका बहुत ही आकर्षक वर्णन किया है। देखिए - कोशगत (कमल नाल में बद्ध) सम्पुष्टान्तर्गत, भँवरा सोचता है - रात चली जाएगी और सबेरा होगा, प्रातःकाल के होते ही सूर्य निकलेगा। सूर्य के निकलते ही कमलिनियाँ खिलेंगी और मैं जी भर देखूंगा। परन्तु उसे क्या पता था कि कल्पनाओं के बांध भी भला किसी के टिके हैं कभी? वह तो विचारमग्न ही था कि - एक उन्मत्त हाथी आया और उसने कमलिनी को ही जड़ सहित उखाड़ फेंका। सच में विधि का क्रूर अट्टहास बड़ा विचित्र है।

- सुभाषित सौरभ

राजनीतिक राज्य व शासन की उन्नति का मार्ग : वेदज्ञान

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

प्राचीन काल में राजा व प्रजा का धर्म वेदानुसार था जिसका राजा व प्रजा मिलकर तीन प्रकार की सभा प्रथम राजार्य सभा दूसरी विद्यार्य सभा तीसरी आर्यधर्म सभा होती थी। आर्य राज सभा के राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी समस्त कार्य होते थे, दूसरी आर्य विद्या सभा जिसमें सब विद्या व शिक्षा का प्रचार सम्बन्धी कार्य होता था, तीसरी आर्य धर्म सभा जिसमें धर्म का प्रचार अर्थात् धर्म सम्बन्धी कार्य होते थे और अधर्म न हो ऐसी व्यवस्था थी आज भी तीन सभा है परन्तु वहां वेद ज्ञान व आचरण का समावेश नहीं है। कार्यपालिका, विधायिका व न्यायपालिका देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् संविधान बना तब उसमें वैदिक ज्ञान का अभाव रहा जबकि वेद में तीन सभाओं की जो व्यवस्था है वहां राजा, प्रजा, राजपुरुष, सेनापति, सेना गुप्तचर, विद्यार्थी अध्यापक आदि सभी के जो गुण कर्तव्य आदि की जो शिक्षा व ज्ञान है वह वैसा अन्यत्र विश्व में कहीं नहीं है। आज के सन्दर्भ में तीनों सभाओं को वेद ज्ञान से युक्त करना श्रेष्ठ होगा क्योंकि वेदादि शास्त्रों में राजा प्रजा धर्म पर विशद ज्ञान दिया है।

महाराजा मनु व महात्मा विदुर की नीति सम्बन्धी ज्ञान की अविरल धारा से यह देश चक्रवर्ती शासकों का स्रोत रहा। चाणक्य जैसे कुशल नीतिज्ञ ने तीन चक्रवर्ती सम्राटों का निर्माण किया था। श्रीकृष्ण की नीति महाभारत युद्ध में अद्वितीय रही थी। कुशल नीतिज्ञ व वेदज्ञानी राजाओं अश्वयति एवं भरतहरि आदि के शासन में प्रजा अत्यन्त सुखी होती थी यह तभी सम्भव था जब यह सब वेद के अनुसार राजा प्रजा का धर्म निभाते थे। वेद में ही ऐसे ज्ञान का भण्डार है यदि एक मन्त्र भी देख लें तो जैसी आज की स्थिति दुःखद बन चुकी है उसमें अवश्य सुधार हो जायेगा। आज राज्य व्यवस्था सुचारु रूप से चलानी है तो वेदाचरण करने वालों को ही तीनों सभाओं में लाना होगा। एक मन्त्र ही देखें मन्त्र तो वेद में ज्ञान देने वाले ज्ञान का प्रकाश होता

है - मानव व समाज के लिये मन्त्र हमें शिक्षा देते हैं। यही ईश्वरीय ज्ञान है प्रत्येक मन्त्र जीवन में उपयोगी है -

यत्र ब्रह्मं च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।

तं लोकं पुण्यं यज्ञेशं यत्र देवाः सहाग्निना ॥

य.अ. २०/मं. २५

जिस देश में उत्तम विद्वान् ब्राह्मण विद्या सभा और राज सभा विद्वान् शूरवीर क्षत्रिय लोग, ये सब मिलकर राजकर्मों को सिद्ध करते हैं। वही देश धर्म और शुभ क्रियाओं से संयुक्त हो के सुख को प्राप्त होता है। जिस देश में परमेश्वर की आज्ञापालन और अग्निहोत्रादि सत्क्रियाओं में वर्तमान विद्वान् होते हैं वही देश सब उपद्रवों से रहित होके अखण्ड राज्य को नित्य भोगता है।

विद्या सभा, धर्म सभा व राज सभा इनके सभासद धार्मिक व विद्वान् हों उनके गुण कर्म स्वभाव सबसे उत्तम हों सभी उत्तम नियों का पालन करते हुए सब सबके हितकर कार्यों के लिये एक दूसरे से विचार विमर्श किया करें तथा सर्वहितकारी कार्यों के लिये परतन्त्र हों तथा निज कार्यों के लिये स्वतन्त्र रहें तभी प्रजा व राज्य सुखी रह सकते हैं।

अपना पुराना इतिहास उठाकर देखें उत्तम ज्ञानी विद्वान् ब्राह्मण राजा के सम्मुख उन्हें सत्य से अवगत कराते थे। राजा यदि वेद विरुद्ध नियमों का आचरण करते थे तो उसके लिये अमात्य अथवा मंत्री उस राजा को कठोर वचन कहते थे और कहने में भय नहीं मानते थे। मगध के शासक चन्द्र गुप्त मौर्य के मंत्री जो गुरु भी थे राजनियमों का कठोरता से पालन कराते थे ऐसे ही हस्तिनापुर में पांडवों कौरवों के शासन में धृतराष्ट्र के यहां विदूर और महान विद्वान् श्रीकृष्ण जैसे वेद के पंडित थे।

ब्राह्मण का गुण है जितेन्द्रिय होना, ब्रह्मचर्य का पालन करना अपनी इन्द्रियों को अन्याय से दूर रखना व न्याय का आचरण करना कराना धर्म मार्ग चलाना। वेदादि सत्य शास्त्रों को अध्ययन करना व अन्य को पढ़ाना दान

देना यह जो कार्य है वह ब्राह्मण के हैं। महाराज मनु ने ब्राह्मण के यह गुण धर्म बताये हैं। ऐसे विद्वान् व्यक्ति शासन में हो तो वह राज्य सुखी हतो है। यह ब्राह्मण शब्द जन्मना जाति से नहीं अपितु गुण कर्म स्वभाव पर आधारित से हैं। राज्य में ऐसे ही विद्वान् अधिकारी हों ऐसे ही सभा के सदस्य हों ऐसे विद्वान् मंत्री होने चाहिये। आज क्योंकि प्रजा तंत्र है ऐसे में प्रत्येक मंत्री वेद का विद्वान् हो प्रत्येक सांसद वेद का आचरण करने वाला हो, अधिकारी सत्य पर दृढ़ता से चलने वाले हों यदि ऐसा होगा तो प्रजा भी उन प्रतिनिधियों के रास्ते पर ही चलेगी और राज्य में सुख की वर्षा होगी।

आज देखने में यह आ रहा है कि राज्यों में एक वर्ष में पांच हजार से अधिक बलात्कार और इतनी ही हत्याएं तथा लगभग इतने ही अपहरण व लूटपाट की घटनाएं हो रही है। उ.प्र. बिहार दिल्ली इनमें घटनाओं दुर्घटनाओं का प्रतिशत सर्वाधिक है। इसका कारण ही यहां अराजकता, अधर्माचरण है, सद्चरित्रता की कमी है। जहां अशिक्षित दुराचारी व अनाचारियों की संख्या सत्ता, समाज में अधिक होगी वहां प्रजा पर अन्याय तो होगा ही, चुनावों में विजय प्राप्ति के पश्चात् अधिकांश नेता जो चुनावों में वोट लेने घर-घर जाते हैं। पांच वर्ष तक जनता कितना भी सिर पिट लें नेताओं को उनके कर्तव्य की याद नहीं आती। जनता भय अन्याय व आतंक के साथे में सुबकती रहती है। ऐसे ही तो राज्य दुखी रहा करते हैं। जनता दुखी रहती है।

अन्यायी दुष्टाचारी लोग जनता को जीने नहीं देते दुष्टाचारियों को ही श्रेय दिया करते हैं। यहां इसीलिये कहा है ब्रह्मं च अर्थात् वेद विद्या व सत्य विद्याओं के ज्ञाता विद्वान् ब्राह्मण होने चाहिये जिनकी वाणी व मन एक से सत्याचरण वाले ही हों, जब तक वेद ज्ञान का प्रकाश रहा और सत्याचरण रहा तब तक राज्य व समाज (राजा प्रजा मंत्री) सब ठीक प्रकार चले परन्तु धीरे धीरे जब वेद विद्या का लोप हुआ राजा मंत्री आदि प्रमादी आलसी लोभी अपस्वार्थी हो गये। अब अमात्य मन्त्र अज्ञानतावश राजा व प्रजा को भ्रमित करने लगे अपने निज स्वार्थ से सम्बन्धित जो लाभकारी था उनसे वेद का नाम लेकर कि ऐसा वेद में लिखा है मनवाने लगे क्योंकि राजा सैनिक आदि तो वेद

पहले ही नहीं थे इसलिए राजा प्रजा अमात्य आदि सब अज्ञानी हो गये राज्य व्यवस्था चौपट हो गयी। अन्धेर नगरी चौपट राजा जैसा सर्वत्र हो गया। आपस में फूट हो गयी जहां परस्पर राजाओं में भ्रातृवत प्रेम था शत्रुता में परिवर्तित हो गया।

यदि मन्त्री अज्ञानी लोभी स्वार्थी हो गये और क्षत्रिय भी ऐसे ही रहे यदि क्षत्रिय वेद पढ़ते तो अमात्य अथवा मंत्रियों की अज्ञानता की बातें नहीं मानते न उनका आचरण ही करते न राज्य नष्ट भ्रष्ट होते। इसीलिए प्रकाश किया है ब्रह्मं च क्षत्रं च, अर्थात् क्षत्रिय भी वेद पढ़ें, क्षत्रियों का कर्तव्य है कि न्याय से प्रजा की रक्षा करना और श्रेष्ठजनों का सम्मान करें ऐसा नहीं कि दुष्टों के साथ सद् व्यवहार करें और श्रेष्ठों से बात ही न करें। श्रेष्ठों का विशेष सम्मान करना चाहिये चारों ओर विद्या बढ़ें कहीं कोई बालक बालिका या व्यक्ति विद्या से दूर न रहें। अज्ञानता रुपी अंधकार न रहे। धर्म का प्रचार हो सभी अपने कर्तव्य कर्मों का सत्यतः पालन करें धन वहीं देना जहां उसकी आवश्यकता हो सभी अग्निहोत्र करें वेदादि शास्त्रों को पढ़ें व पढ़ावें, यह क्षत्रियों को करना, कराना चाहिए। ऐसा नियम बनावें कि सभी इनका पालन करें इसी प्रकार वैश्य अपना कार्य पशुपालन कृषि आदि सत्य रूप से करें जिससे प्रजा को अन्नादि समुचित रूप से मिलता रहे। शूद्र सेवा कार्यों में दक्ष हों, मन में पक्षपात ईर्ष्या, अभिमान न हो कर सब प्रकार से सेवा कार्य करते रहें।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र सभी अपने अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करें पक्षपात न करें परस्पर सहयोग करें आपसी सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। बिना सहयोग के कोई कार्य सुचारु रूप से नहीं हो सकता। ब्राह्मण विद्या का दान देवें क्षत्रियादि व प्रजा भी विद्यावान् हों। क्षत्रिय प्रजा की रक्षा करने में तत्पर रहें कहीं अधर्म न हो दुश्चरित्रता न हो, अनाचार न हो, समाज की गतिविधियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखें। वैश्य जन कृषि पशुपालन को भलीप्रकार से करें पशुओं की सेवा यथायोग्य करें व पशुओं से लाभ लेवें। आज छोटे विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर जो शिक्षक वर्ग हैं ब्राह्मण वर्ग समान ही हैं।

उनमें गुरुकुल व आश्रम तो उचित है परन्तु अन्यत्र वेदज्ञान का अभाव है। उसमें भी यदि शिक्षक दुराचारी, मद्यापानी, दुर्व्यसनी हो तो वह समाज को योग्य सद्चरित्र विद्यार्थी तो नहीं दे सकता।

भारत में आज वह प्राचीन गौरव नहीं एक समय था जब राजा प्रजा का पूरा ध्यान रखता था। प्रजा दुखी न थी और कोई कष्ट न था। यदि कोई दुखादि होता था तो राजा या राज कर्मचारी स्वयं प्रजाजनों के पास जाकर समस्या का निराकरण करते थे। कोई भूखाना सोता था, उस राज्य में राजा मंत्री सैनिक व कर्मचारी सभी वेद विद्या के जानने वाले तथा आचरण करने वाले होते थे। ऐसा कोई न होता था जो अग्निहोत्र न करता हो। परस्पर आपसी सहयोग से राज्य व प्रजा के कार्यों को भली प्रकार से अपना धर्म मान कर किया करते थे।

जब आपस में परस्पर सहयोग होता था तभी राज्य के कार्य सम्यक् रूप से चलते थे। परस्पर सहयोग न रहने से ही राज्य व्यवस्था विकृत हो गयी। छोटे-छोटे राज्य बने चक्रवर्ती राज्य न रहे। आपस में द्वेष बढ़ गया, अन्धविश्वास बढ़ गये क्योंकि शिक्षा व्यवस्था भी चौपट हो गयी।

आज वह स्थिति विभिन्न राजनीतिक दलों की है जहां अपने स्वार्थ को ही महत्व दिया जाता है। चुनाव से पूर्व वाक् युद्ध जैसी स्थिति होती है। जो नहीं बोलना चाहिये वह बोला जाता है। राष्ट्र के सम्मान तक को ताक पर रख दिया जाता है। राष्ट्र की रक्षा से सम्बन्धित इतिहास व स्मारकों से संबंधित गाय की रक्षा जैसी बातों को साम्प्रदायिक बता दिया जाता है। ऐसे में कैसे राष्ट्र की रक्षा हो सकेगी।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा - २०३१३१

यज्ञ माहात्म्य घरो में सब लोग मिलकर यज्ञ कर अपनी आहुति देते हैं

प्रत्येक घर में, प्रत्येक रविवार में प्रतिदिन यज्ञ होता है तथा इस घर के सब लोग, इस परिवार के सदस्य लोग इस यज्ञ में मिलकर बैठते हैं तथा इस यज्ञ में मिलकर ही अपनी आहुति देते हैं। घर की पवित्र अग्नि से यज्ञ की अग्नि को प्रदीप्त कर, उस अग्नि में यथावश्यक आहुति डालते हैं। इस प्रकार के यज्ञों के द्वारा इस घर के लोग महान, अग्नि का पूजन करते हैं। इस तथ्य को इस चौथे मन्त्र में इस प्रकार व्यक्त किया गया है- प्रतेअग्नयोऽग्निम्योवरंनिः सुवीरसः शोशचन्तदयुमन्तः। यत्रानरः समासतेसुजाताः ॥ ऋ. ७.१.४ गार्हपत्य अग्नि अर्थात् घर की अग्नि, सदा हम उस अग्नि को प्रणयन करते हैं, हम सदा उस अग्नि को बुलाते हैं, सदा उस अग्नि को जलाते हैं, जिस अग्नि का हमने आह्वान करना होता है। इसलिए ही कहा जाता है कि हे गार्हपत्य अग्नियों! तुझ से ही यज्ञ की अग्नियां जला करें। यह अग्नियां अच्छे से ज्योतिष होकर, यह अग्नियां तेज को धारण कर, यह अग्नियां तीव्र होकर अच्छी प्रकार से, ठीक से रोग के कृमियों को, रोग के कीटाणुओं को कम्पित करने वाली, भयभीत करने वाली हों, यह अग्नियां रोगाणुओं को मारने वाली हों। इस प्रकार यह यज्ञ की अग्नि सब प्रकार के भूत आदि को पीछे धकेल दे, भगा दे। किसी प्रकार के भय को रहने ही न दे। इस अग्नि अर्थात् इस यज्ञ की अग्नि के पास सदा ही उत्तम प्रकृति वाले अथवा कुलीन लोग ही रहते हैं, इस यज्ञ की अग्नि के पास सदा अच्छे लोग निवास करते हैं। सब लोग बड़े प्रेम से इस अग्नि के समीप अपना आसन लगा कर रहते हैं। यह लोग जिस प्रकार नाभि के आरे होते हैं, वैसे ही इस यज्ञाग्नि के चारों ओर मिलकर गति करते हुए, कर्म करते हुये, यज्ञ सम्बन्धी व्यवहार करते हुए यज्ञ के आसन पर आसीन होते हैं। इस प्रकार यह लोग यज्ञ की इस अग्नि का पूजन करते हैं तथा इसमें यथावश्यक घी तथा सामग्री की आहुति देते हैं। इस मन्त्र परमपिता परमात्मा प्राणी मात्र को उपदेश करते हुए बता रहे हैं कि यज्ञ के क्या लाभ होते हैं? यज्ञ के क्या लाभ होते हैं, जिस परिवार में नित्य प्रति यज्ञ होता है, उस परिवार में सदा सुखों की वर्षा क्यों होती रहती है? परिवार क्यों रोग रहित होकर धनधान्य से भर जाता है? इन सब गुणों का, इन लाभों का वर्णन करने का अभिप्राय यह है कि जो परिवार सुखों की अभिलाषा करता है, जो परिवार चाहता है कि ये सब सदस्य सदा निरोग रहें, जो परिवार चाहता है कि हमारे परिवार में कभी कोई कष्ट न आवे तथा सदा उनके पास धन धान्य के भण्डार भरे रहें तो इस परिवार में प्रतिदिन दो समय यज्ञ किया जाना चाहिए।

- डॉ. अशोक आर्य

“असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।”

“हे प्रभु! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।”

यदि हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि व्यक्तित्व का निर्माण क्यों? तो फिर यह प्रश्न अवश्य उठना चाहिये कि यह मनुष्य जीवन ही क्यों? क्या इस जीवन का भी कोई यथेष्ट उद्देश्य हो सकता है, क्योंकि जब हम यह अनुभव करते हैं कि इस संसार में कोई भी वस्तु बेकार नहीं बनी है, प्रत्येक वस्तु सकारण है। प्रत्येक चर-अचर प्राणी एक दूसरे के सहजीवी हैं। सभी पदार्थ एक वलय चक्र के रूप में विद्यमान हैं तथा प्रत्येक जीव पारि का एक निश्चित जीवन चक्र है। सभी जीवों में धारित गुण भी लगभग समान हैं। इसी प्रकार प्राणियों के मनोभाव तथा उनके क्रमिक विकास में भी बहुत कुछ समानताएं पाई जाती हैं। हां! विभिन्न प्राणियों में हम पाते हैं कि किसी में गुणों की क्रियाशीलता कुछ कम है तो किसी में कुछ अधिक। इसी प्रकार हम पाते हैं कि जीवधारियों में प्रत्येक इन्द्रिय का जो भी विषय-गुण है, वह अवश्य ही इस परिवेश में कहीं विद्यमान है और इसी प्रकार जहाँ भी किसी तत्व की विद्यमानता है, वैसे ही गुणधर्म वाले जीव और पदार्थ वहाँ विद्यमान हैं। इसी प्रकार हम पाते हैं कि प्रत्येक संसार का कोई भी ऐसा पदार्थ, वस्तु या पेड़-पौधे अथवा प्राणी नहीं है, जिसके गुण-धर्म का प्रकटित में कोई सदुपयोग न हो। संसार में कुछ भी गुणहीन और सारहीन नहीं है। इस प्रकार हम पाते हैं कि इस मनुष्य जीवन के होने का कोई न कोई कारण अवश्य है और इसी कारण की खोज के लिए हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है, इस जीवन के उद्देश्य को जानने की आवश्यकता है और इस जीवन उद्देश्य को जानने के लिए आवश्यक है यथेष्ट दिशासूचक, एक सार्थक पहल की। यह सार्थक पहल हमें यदि कहीं मिल सकती है तो वह हमारी मानसिक उत्क्रांति से ही संभव है। हमारी मानसिक चैतन्यता, इसकी सक्रियता ही हमें हमारे जीवनोद्देश्य को खोजने में मदद कर सकती है और यह चैतन्यता हमें प्राप्त हो सकती है मात्र तपोशील, स्वाध्यायी एवं आस्थापूर्ण, श्रद्धावान जीवन शैली से। हमारे

सद्गुणी आचार हमारे सकारात्मक विचार और यथेष्ट आत्मशक्तिपूर्ण संकल्पित चरित्र से। इसलिए हमें अपने व्यक्तित्व निर्माण की ओर एकनिष्ट होकर लगनपूर्वक प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमारा व्यक्तित्व ही मानव सभ्यता का दूसरा नाम है। हमारे पास यदि यथेष्ट चरित्र नहीं हो तो हमारी शक्तियों की अपेक्षा दुर्बलताएँ ही अधिक प्रभावी होंगी और हमारे सौभाग्य की तुलना में दुर्भाग्य ही अधिक बलशाली होगा। यह हमारा चरित्र ही है जो हमारे समाज के निर्माण का पूर्णतः जिम्मेदार है। हमारा चरित्र ही है जो हमें सामाजिक शान्ति-सामंजस्य, सुख-संयम, सच्चाई, व ईमानदारी का अवदान देता है। आज के समय में जब हमारा समाज और हमारी युवापीढ़ी इस ओर बिलकुल भी ध्यान नहीं दे रही है, हमें इस पर चिंतन करने और अपने रोजमर्रा के जीवन में उतारने की महती आवश्यकता है ताकि हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ नैतिक मूल्यों के महत्व को समझें और वे चारित्रिक विकृति तथा वितण्डावाद के गहरे संकट में न फँसे। विचार करें यदि हममें आपस में विश्वसनीयता, प्रेम, परोपकारिता, न्यायपरायणता, जैसे सद्गुण शून्य हो जायेंगे तो हमारे समाज में सभी ओर लड़ाई-झगड़े, उत्तेजना-उपद्रव, भ्रष्टाचार-अनैतिकता का ही बोलबाला होगा।

महान चिंतक और विचारक कन्फ्यूशियस का कथन है “अपने स्वयं के चरित्र का निर्माण तथा साथ ही दूसरों को भी वैसा ही करने में सहायता करना, स्वयं सफलता प्राप्त करने का प्रयास और दूसरों की भी सफलता में सहायक होना, सभी की एक साथ उन्नति अर्थात् सर्वोदय का सिद्धान्त है।”

समाज में सभी की उन्नति आवश्यक है। यदि कोई भी व्यक्ति पीछे छूट जाता है और उसका चरित्र गिरता है या वह सही मार्ग से भटकता है तो इसकी जिम्मेदारी प्रत्येक चिंतनशील और बुद्धि संपन्न व्यक्ति की ही है क्योंकि जो बुद्धिशील और समाज के अधिष्ठाता हैं वही समाज को सही दिशा देने में सक्षम होते हैं। विभिन्न व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न हैं। सबकी सफलता और उन्नति के अपने-अपने साधन और अपने-अपने मार्ग हैं। जो कहीं पर समान हैं

और कहीं पर भिन्न हैं। आज हम देखते हैं कि स्वार्थपरता के कारण यह किसी न किसी रूप में एक दूसरे की उन्नति के प्रतिकूल सिद्ध हो रहे हैं। आज आवश्यकता है सार्वभौमिक भलाई वाली सोच की और यह मात्र हमारे यथेष्ट चरित्र तथा श्रेष्ठ व्यक्तित्व से ही प्राप्त हो सकती है। एक मानवतावादी सोच ही सही मनुष्य का निर्माण कर सकती है और मात्र सही मनुष्य ही समस्त समस्याओं के निवारण में सहायक हो सकता है। कन्फ्यूशियस आगे भी कहते हैं कि "जिसमें मनुष्यत्व नहीं वह न तो अधिक काल तक निर्धनता को सहन कर सकता है और न ही सम्पन्नता को पचा सकता है।" यह बात वर्तमान काल में कितनी सच साबित हो रही है, क्योंकि निर्धनता मनुष्य को दीन-हीन पशु में परिवर्तित कर रही है और धन की बाढ़ मनुष्य को बर्बर, दिशाहीन, अनुद्देश्यपूर्ण काल के गाल में ढकेल रही है।

यह सच है कि हमने प्रगति तो की है। हमारी कुशलता, बुद्धिचातुर्य, तथा स्वार्थपरता अवश्य ही आज पहले से अधिक विकसित है। परंतु स्वार्थपरता इतनी अधिक है कि वह कुशलता और बुद्धिचातुर्य पर भारी पड़ रही है और हमारे समाज के अग्रिम पंक्ति में पदस्थ शासक, प्रशासक, न्यायाधीश, वकील, व्यवसायी, चिकित्सक, तकनीकी तंत्र से जुड़े व्यक्ति आज भ्रष्टतम स्थिति पर हैं। हमने आवागमन तथा संचार तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति तो की है हमने भौतिक दूरियों को कम तो किया है पर यह भी सच है कि हमारे मन की दूरियां बढ़ी हैं। हम समाज को यदि सभ्यता के पैमाने पर आंके तो आज हम अधिक असभ्य हुए हैं। आज मनुष्य-मनुष्य में भेद अधिक हो गया है। आज मनुष्य, मनुष्य का शोषण ही नहीं कर रहा वरन वह अपने समस्त परिवेश और पर्यावरण का शोषण करने पर अमादा है। मतभेद अधिक हुए हैं, समरसता और समझदारी कम हुई है। राग-द्वेष, ईर्ष्या के भाव अधिक हुए हैं तथा मानव मन की कलुषता में वृद्धि हुई है। मनुष्य ने मानवतावादी धर्म के लक्षणों को खो दिया है।

हम देखते हैं कि आज समाज में चरित्र की जो गिरावट आई है वही जल, थल और वायु में प्रदूषण के रूप में सभी ओर दिखाई दे रही है। प्रकृति ने तो सभी के लिए पर्याप्त स्थान और संसाधन उपलब्ध कराये हैं पर मनुष्य ही है जिसने इस संसाधनों को एक दूसरे से वंचित करके उसे निर्धन बना रखा है। इसी प्रकार हम प्रकृति को निहारे तो आज वह जिस प्रकार धूल-धूसरित है, उसमें जो विद्रूपता और विषमता दिखाई देती है वह मनुष्य के चरित्र-व्यवहार की स्वयं की उपज है। जबकि

प्रकृति ने अपनी गोद में सब कुछ इतनी प्रचुरता से दिया है कि मानव को कुछ भी कमी नहीं है परंतु हम देखते हैं कि आज न तो हमें शुद्ध वायु मिल रही है और न ही शुद्ध पानी। यहाँ तक कि रासायनिक पदार्थों के प्रदूषण से हमारी धरती की उर्वरता भी समाप्त प्रायः होती जा रही है। आज मनुष्य नये-नये ऐसे कठिन रोगों से ग्रसित होता जा रहा है कि आज उसकी बहुत ही दयनीय स्थिति होती जा रही है। प्रकृति तो हमें सभी कुछ शुद्ध रूप में उपलब्ध कराती है पर यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अपने स्वयं के लिए, अपने बच्चों तथा अन्य लोगों को खिलाने के लिए भोजन पदार्थों में मिलावट का जहर घोलता है। आज संसार जिन गंभीर स्थिति से ग्रसित है वह मानवता के लिए बहुत ही चिंताजनक है। आज हमारी पृथ्वी विध्वंसक मिसाइलों, परमाणु बमों तथा रासायनिक हथियारों के गम्भीर परिणामों की आशंका से घिरी हुई है, जिन्हें मानव ने स्वयं निर्मित किया है। धन और धर्म के नाम पर विश्व स्तर पर आपसी मारकाट मची हुई है। यह आपसी द्वेष, मनुष्य की अपनी निम्न सोच का ही परिणाम है। कभी भी कोई खनिज और रसायन आपस में मिलकर स्वयं से विध्वंसक पदार्थ या बम की रचना नहीं करते यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अधोगति की ओर ले जाने पर आमादा है।

आज आवश्यक है एक महानायक की जो समाज को विश्वस्तर पर सही दिशा दे। जिससे हमारा व्यक्तित्व उत्तम हो और उसमें निश्चार आये। आज आवश्यकता है एक ऐसे महामानव कि जो अपने विचारों से संसार को अच्छी राह दिखाये और उसका मार्ग शान्ति की ओर प्रशस्त करे, जहाँ अपराधिक कार्यों की अपेक्षा सेवाभाव वाले कार्यों की प्रचुरता हो, असुरक्षा की अपेक्षा सुरक्षा का भाव अधिक हो, हमारे घर-हमारी बस्तियां, हमारी पृथ्वी गंदगी और प्रदूषण का अंबार बनने की अपेक्षा स्वच्छ, सुंदर और प्रदूषण मुक्त हो। हमारे शिक्षा संस्थान, न्यायालय, चिकित्सालय, व्यवसायिक प्रतिष्ठान न होकर उच्च चरित्र वाले, प्रकृति के सहजीवी भाव को प्रसारित करने वाले तथा निष्ठावान चरित्र के अनुगामी हों। यदि हमारा चरित्र अच्छा होगा, हमारे शिक्षार्थी चरित्रवान होंगे। हमारे समाज में शत्रुता की अपेक्षा एक दूसरे को ऊँचा उठाने एवं असहायों की सहायता करने का पवित्र भाव ही फले फूलेगा। हमारे चिकित्सालय सेवाधर्म वाले होंगे और हमारे धर्मसंस्थान व्यवसायिकता के केन्द्र न होकर सही मायने में धर्म के लक्षणों को समाज को देने वाले होंगे। धर्माचार्य और मठाधीश मात्र पौराणिक चरित्रों के किस्से-कहानी

कहने वाले न होकर मनुष्य को मानवता का सही पाठ पढ़ाने वाले तथा सदाचरण को व्यवहार में लाने वाले होंगे। आज युवापीढ़ी मात्र कालयापन कर अपना जीवन नष्ट कर रही है। उसके पास न तो यथेष्ट विचार हैं और न ही जीवन का कोई उद्देश्य। हम देखते हैं कि वर्तमान पीढ़ी असीम गति से दिशाहीन दौड़ रही है और स्वयं ही अपनी हंता बन रही है। वह स्व-अनुशासन भूलकर असंयमित जीवन जीने को बाध्य है। उसकी ऊर्जा, सुख-शांति तथा लावण्यता खोती जा रही है। उसका जीवन दयनीयता और चारित्रिक दरिद्रता की ओर बढ़ रहा है। वह पूर्णतः दिशाहीन है। इस प्रकार हम पाते हैं कि आज की पीढ़ी को दिशानिर्देश की परम् आवश्यकता है।

व्यक्तित्व निर्माण ही समाज को सही विचार और संस्कार दे सकता है। जिससे समाज में सुधारात्मक कार्यों में प्रगति हो। समाज सदैव जागृत रहे और वह सदैव समाजिक हित के कार्य साहस और उत्साह के साथ संपन्न करे। हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम कड़ी हैं, जिससे हमारी जीवन शैली, वैवाहिक – संबंध, पारिवारिक स्नेह तथा एकदूसरे के प्रति कलुषविहीन भावनाओं का उत्कृष्ट विकास हो सकता है। सही विचार का अभाव समाज तथा लोकतंत्र के लिए बेहद खतरनाक है, आज हम देखते हैं कि समाज जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है। पारिवारिक प्रेम की कड़ियाँ टूट रही हैं। इस प्रकार तो मानव-त्व में भेद बढ़ता ही जायेगा। मन का विश्वास खो जायेगा, आनंद और खुशी का अभाव होगा, साथ ही नेत्रों तथा चेहरे का तेज खो जायेगा। हम विचार रहित हो अपनी आत्मशक्ति और विश्वास भी खो बैठेंगे। समाज की प्रफुल्लता समाप्त हो जायेगी।

आवश्यकता है एक वैचारिक और सुधारात्मक, सामाजिक निर्माण के आंदोलन की और वह मात्र संभव है सामाजिक चरित्र के उत्थान से। हमारा चरित्र ही हमारा व्यक्तित्व है। हम जो दिखाई देते हैं वही हम हैं, विद्वानों ने कहा है कि *“किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही उसका व्यक्तित्व कहलाता है।”* आप जिस प्रकार के व्यक्ति हैं, वही आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है। प्रश्न यह है कि सदाचरण तथा संवेदनशीलता समाज में कैसे प्रसारित हों, क्योंकि यही हैं जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह मनुष्य का चरित्र ही है जिससे वह अपने इतिहास का निर्माण करता है। वह इस संसार में अपने अस्तित्व की शैली को अंकित कर जाता है। यही

मात्र उसकी नेकनामी तथा अमरता का एक माध्यम है। यह उसकी प्रत्येक उपलब्धि से ऊपर है। *“मनुष्य वही बनता है जो वह बनना चाहता है”*, यह आकाद्य सत्य है। उसका संसार भी वैसा ही बनता है, जैसे उसके संस्कार होते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपने पीछे वैसा ही इतिहास छोड़ जाता है जैसा उसका चरित्र होता है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति के संस्कारों की समष्टि, उसकी सभी मानसिक वृत्तियों का संकलन ही उसका चरित्र है। अच्छे विचारों तथा संस्कारों से ही उसका चरित्र अच्छा होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारा व्यक्तित्व हमारे संयमित आचरण पर निर्भर है और हमारा आचरण हमारे संस्कारों पर तथा संस्कार विचारों पर निर्भर है। संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है और असंयमित मन एक शत्रु की भांति। यदि मन तथा इन्द्रियाँ अनुशासित और संयमित हैं तो मनुष्य जीवन के लक्ष्य तक पहुँच सकता है। व्यक्ति की भावनाएँ जितनी अनुशासित तथा संयमित होंगी उसका व्यक्तित्व भी उतना ही स्वस्थ और उच्च होगा। इस प्रकार हम पाते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसका चरित्र उत्तम हो और चरित्र की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक है कि उसके विचार, संस्कार, और व्यवहार उत्कृष्ट हों। इसलिये अपने भविष्य के निर्माण के लिए हमें वर्तमान में अधिक श्रम और अधिक शुद्धतापूर्ण जीवनशैली अपनानी होगी, क्योंकि यह सत्य है कि भूतकाल ने वर्तमान का निर्धारण किया है, हमारे वर्तमान विचार तथा व्यवहार हमारा भविष्य निर्धारित करेंगे। यह व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करने वाला मूलभूत सिद्धान्त है। आज आवश्यकता है कि हम छोटे तथा साधारण कार्य को भी इतनी प्रतिबद्धता से सम्पन्न करें कि उसके परिणाम से हमारी उत्कृष्टता प्रकट हो।

पता : ए.एस. 302, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)

योग सुविचार

पवित्र ‘ओ३म्’ का जप करने तथा मोक्ष का उपदेश करने वाले शास्त्रों को पढ़कर मन के विचारों का निरोध करें और मन के विचारों के निरोध के सहयोग से ‘ओ३म्’ के जप का अभ्यास करें। इस स्वाध्याय और योग की सिद्धि से अन्तरात्मा में परमात्मा का प्रकाश हो जाता है।



- स्व हरिसाहू

अजन्मी बेटी की गुहार

कन्या का वध देख रहा है मौन जगत यह सारा ।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

(१)

रो कर कहे अजन्मी बेटी- मुझे न मारो माता ।
मेरे साथ तुम्हारा क्या अब शेष न कोई नाता ॥
भूल हुई क्या मुझसे जननी ? जो तुम इतना रूठी ।
बांध रखी मन में तुमने ऐसी क्या दुविधा झूठी ॥
माँ ! मैं अंश तुम्हारा हूँ, जीने दो मुझे, न मारो ।
मुझे गर्भ में बढ़ने दो माँ ! प्यार करो, पुचकारो ॥
धड़क रहा दिल डर से मेरा, भय से काँप रही हूँ ।
अपनी लुटती मिटती जीवन-रेखा नाप रही हूँ ॥
मुझे राह दे दो जीवन की, दे दो तनिक सहारा ।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

(२)

प्यारी माँ ! मुझको मत मारो, मुझको भी जीने दो ।
छाती से चिपटा कर मुझको ममतामृत पीने दो ॥
तीन माह बीते हैं मुझको गर्भ तुम्हारे आए ।
भूल हुई क्या मुझसे माँ ? कोई तो मुझे बताए ॥
नहीं बर्नूंगी बोझ तुम्हारा, जग में नाम करूंगी ।
देखेगी सारी दुनिया, मैं ऐसा काम करूंगी ॥
बेटों को सब दे देना, मैं तुमसे कुछ ना लूंगी ।
किरण, कल्पना, प्रतिभा सा भारत को गौरव दूंगी ॥
मुझे न मेरा जीवन-दीपक, होने दो उजियारा ।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

(३)

कहीं जन्म से पहले ही जीवन की डोर न टूटे ।
माता और पिता का साया मिलते मिलते छूटे ॥
मैं निर्दोष तुम्हारी बेटी, मेरी क्या गलती है ?
हाय ! गर्भ में नारी को नारी ही क्यों छलत है ??
इतनी निष्ठुर बनो न माता ! करो न हत्या मेरी ।
मुझे जन्म से पहले ही, मत करो राख की बेरी ॥
माँ की ममता, प्यार पिता का, ना देखा, ना जाना ।
अभी गर्भ ही है मेरे जीवन का ठौर ठिकाना ॥
देख रही मैं सपना-माँ ! तुमने मुझको स्वीकारा ।

हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

(४)

माता ! बिना तुम्हारे, मेरा सूना यह जीवन है ।
पर मेरे बिन मातृ ! तुम्हारा भी उजड़ा आँगन है ॥
माँ ! तुम मेरा गला घोट कर, खुशियाँ पा न सकोगी ।
अपनी ही नजरों में तुम अपराधी हो जाओगी ॥
तीन माह की बेजुबान बेटी को यदि मारोगी ।
जीवन भर तुम खुद को माँ कोसेगी, धिक्कारोगी ॥
अपनी बेटी की हत्या कर, बनो न माँ हत्यारी ।
सुन लो माँ ! तुम एक अजन्मी बेटी की सिसकारी ॥
मेरे आकुल अंतस्तल ने रो कर तुम्हें पुकारा ।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

(५)

बेबस हूँ, क्या करूँ ? समझ में मुझे नहीं कुछ आता ।
किंतु मृत्यु के भय से नन्हा सा दिल है घबराता ॥
जननी, जन्मभूमि को कहते सभी स्वर्ग से बढ़ कर ।
बोलो जननी ! क्या पा जाओगी तुम, मेरा वध कर ??
भ्रूण बच गया तो भी बेटी खतरों पर पलती है ।
बतलाओ ! चूल्हे से केवल बहुएँ क्यों जलती हैं ??
सास, ननद तो कभी न जलतीं, ऐसा क्यों होता है ?
बहुएँ रोती रहती हैं, जब सारा घर सोता है ॥
मुझे जलाने को दुनिया ने सुलगाया अंगारा ।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

(६)

यही हाल जो रहा अगर तो वह दिन भी आएगा ।
बेटी, पत्नी, माँ बिन यह जग निर्जन हो जाएगा ॥
सृष्टि-चक्र के साथ, न माता करो क्रूर मानमानी ।
मरती रही बेटियाँ तो छा जाएगी वीरानी ॥
पा कर गोद तुम्हारी माता, मैं जीना सीखूंगी ।
साथ पिता के सूरज, चंदा, तारों को देखूंगी ॥
दया करो बेटी पर, मुझको मत मारो, मत मारो ।
कन्या-भ्रूण मारते हैं जो, माँ उनको धिक्कारो ॥
हाय ! मातृ देवो भव का हो रहा कलंकित नारा ।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा ॥

पता - नागोराव शेष बाजार, बिलासपुर (छ.ग.)

अस्तु जियो मर्यादित जीवन

मर्यादा में है मानव जीवन का मधु-माधुर्य भरा ।
जीवन का रस है, सुगंध है, शिवम् सत्य सौन्दर्य खरा ॥

जो मर्यादा में रहके जीता, वह गरिमा-गौरव पाता ।
पुरुषों में पुरुषोत्तम, श्रद्धा भाजन बनता, पूजा जाता ॥
बड़ा सरल है सुविधाओं में मर्यादित होकर रह पाना ।
किन्तु कसौटी है, विपत्ति में मर्यादा से न डिग पाना ॥
जिसमें कुसमय में, विपदा में आत्म नियंत्रण है निखरा ।
उसका जीवन ही खिलता है, शिवम् सत्य सौन्दर्य भरा ॥१॥

राम, राज्य अभिषेक सूचना पाकर के भी रहे सहज ही ।
वन का जब आदेश मिला था, तब भी वैसे के वैसे ही ॥
उनकी मुख की मुस्काहट में कोई फर्क नजर नहीं आया ।
स्वीकारा सप्रेम सहज, मर्यादित रहकर उसे निभाया ॥
वचनों की मर्यादा रखी, सहज संतुलन योग धरा ।
वन में ऋषि मुनियों की रक्षा की, उनका दुःख दर्द हरा ॥२॥

जब जीवन मर्यादा में बंधता, सौन्दर्य निखर आता है ।
मर्यादा से गिरते ही वह सब सुख-चैन बिखर जाता है ॥
राक्षसों के पास स्वर्ण था, किन्तु न थी उनमें मर्यादा ।
खाना, पीना, मौज उड़ाना, ही था जीवन में आमदा ॥
इससे ही अशान्ति, तम, तामस मय था, जीवन क्लेश भरा ।
पाश्चात्य जीवन शैली में है प्रभाव इसका गहरा ॥३॥

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु है, जब तक मर्यादा में रहती ।
तब तक की कल्याण दायिनी होकर जन मन रंजन करती ॥
सरिता, पवन, अग्नि की लपटें, विद्युत अउ परमाणु शक्तियाँ ।
मर्यादा तजतेही बनती, सर्वनाश की नृत्य-नरतियाँ ॥
असमय ही गहराती, लाती प्रलय दृश्य दुख-दर्द भरा ।
अस्तु जियो मर्यादित जीवन, शिवम् सत्य, सौन्दर्य भरा ॥ ४ ॥

- दयाशंकर गोयल,

१५५४, डी, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)

पिन-४५२००९



महात्मा हंसराज

महात्मा हंसराज को सर्वस्व त्यागी के रूप में माना जाता है। आपने अवैतनिक रहते हुए, डी.ए.व्ही. के प्रथम प्राचार्य स्वरूप कार्य किया। अपना काम अपने हाथों से करते थे। स्कूल के पेन से अपना कार्य न करते थे। आपका जन्म १३ अप्रैल १८२७ को हुआ।

कौन पहुंचा है - तुम्हारे त्याग के उत्कर्ष को ।
गगन करता है नमन, आपके आदर्श को ॥
तृष्णा में तृप्ति का - क्या आनन्द है ।
तरसते फिरते हैं योगी-आपके परामर्श को ॥
स्वार्थ से परमार्थ पर - बलिदान करने की कला ।
हंसराज होकर सिखाई-तुने हर संघर्ष को ॥
आपके संगतीकरण से - कितने पारस हो गये ।
आशीष अमृत सिद्ध था - तेरे विचित्र स्पर्श को ॥
ज्ञान के जेवर पहनाये - हर मनुष्य संतान को ।
देवता कहती है दुनिया - आपसे इंसान को ॥

परमपिता परमात्मा का रचनात्मक सौन्दर्य कण-कण में विद्यमान है। देखने को नेत्र है, ज्ञानवधु को दिव्यप्रकाश साधना से प्राप्त होता है। चित्त की एकाग्रता मनुष्य को योगाभ्यास से प्राप्त होती है। ध्यान परमेश्वर की कृपालता में रहे और कर्तव्य बोध कर्म का लक्ष्य और आत्मा बने। सर्वसमर्पण की भावना से किया हुआ ज्ञानयुक्त प्रकाशमान पथ के पथिक के पुरुषार्थ परमेश्वर के प्रत्येक वरदान में इदन्न मम के भाव और उत्कर्ष से सुसज्जित करे। इस पुरुषार्थ का फल वह अद्भुत सफलता है, जो त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज के तप और बलिदान को महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति स्मारक (डी.ए.वी.) के विद्याविस्तार यज्ञ प्रकाशमय जग प्रसिद्धि के रूप में मिली।

- हरबंशलाल कपूर, सहमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मन्दिरमार्ग,
नई दिल्ली-११०००९



५ अप्रैल
श्री रामनवमीं
पर विशेष

आदर्श व्यक्तित्व के प्रतीक श्रीराम

भगवान राम आदर्श व्यक्तित्व के प्रतीक हैं। परिदृश्य अतीत का हो या वर्तमान का, जनमानस ने रामजी के आदर्शों को खूब समझा-परखा है, लेकिन भगवान राम की प्रासंगिकता को संक्रमित करने का काम भी किया है। रामजी का पूरा जीवन आदर्शों, संघर्षों से भरा पड़ा है उसे अगर सामान्यजन अपना ले तो उसका जीवन स्वर्ग बन जाए। लेकिन जनमानस तो सिर्फ रामजी की पूजा में व्यस्त है, यहां तक कि हिंसा से भी उसे

परहेज नहीं है। राम सिर्फ एक आदर्श पुत्र ही नहीं, आदर्श पति और भाई भी थे। आज न तो कोई आदर्श पति है और न ही आदर्श पुत्र या भाई है। जो व्यक्ति संयमित, मर्यादित और संस्कारित जीवन जीता है, निःस्वार्थ भाव से उसी में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों की झलक परिलक्षित हो सकती है। राम के आदर्श लक्ष्मण रेखा की उस मर्यादा के समान है जो लाँधी तो अनर्थ ही अनर्थ और सीमा की मर्यादा में रहे तो खुशहाल और सुरक्षित जीवन। प्रजा का सच्चा जनसेवक राम जैसा आदर्श सद्चरित्र आज के युग में दुर्लभ है। हमारे जनप्रतिनिधि जनसेवा की बजाए स्वसेवा में ज्यादा विश्वास करते हैं जबकि भगवान राम ने खुद मर्यादा का पालन करते हुए स्वयं को तकलीफ और दुःख देते हुए प्रजा को सुखी रखा क्योंकि उनके लिए जनसेवा सर्वोपरि थी। राम जैसे आदर्श मर्यादा यदि हममें होती तो आज स्त्रियों को अग्नि परीक्षा से नहीं गुजरना पड़ता। राम के चरित्र को केवल एक प्रतिशत ही हमारे देश के नेता अपने जीवन में आत्मसात कर लें तो हम आज विश्व मंच पर सुशोभित हो जाएंगे।

‘मनुष्यों का धर्म सत्याचार है जो सबका एक ही है’

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून



धर्म शब्द का वास्तविक अभिप्राय क्या है? धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है। इसकी परिभाषा है कि जो वस्तु जिन गुण व गुणों को धारण करती है वह उसका धर्म कहलाता है। अग्नि रूप, दाह, ताप, प्रकाश आदि को धारण करती है तथा सदैव ऊपर की ओर ही गति करती है। यह सब अग्नि के गुण व धर्म कहलाते हैं। इसी प्रकार से वायु, पृथिवी, आकाश, जल आदि के गुण हैं। मनुष्य को किसे व क्या-क्या धारण करना चाहिये? संसार में सत्य व असत्य दो प्रकार के गुण हैं। मनुष्यों द्वारा सत्य भी बोला जाता है और असत्य भी। दोनों परस्पर विरोधी गुण हैं। अब इनमें से किसको धर्म व किसको अधर्म माना जाये? संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो यह चाहता हो कि दूसरे लोग उसके साथ असत्य का व्यवहार करें। सभी मनुष्य यह चाहते हैं कि उनके साथ दूसरे लोग सदैव सत्य का ही व्यवहार करें। सत्य उसे कहते हैं कि जो पदार्थ जैसा है उसका वैसा ही वर्णन करना। उसके विपरीत यदि वर्णन किया जाये तो वह सत्य न होकर असत्य कहलाता है। अग्नि में जलाने का गुण होता है। यदि कोई यह कहे कि अग्नि जलाता नहीं है तो यह असत्य होगा। यदि कहें कि अग्नि में दाह वा जलाने का गुण होता है तो यह सत्य माना जायेगा। इसी प्रकार से सत्य व्यवहार वा सत्याचरण धर्म व इसके विपरीत असत्य का व्यवहार अधर्म व असत्य कहलाता है। अब यह विचार करें कि सत्य क्या किसी स्थान विशेष के लोगों का गुण है या यह सार्वभौमिक सभी मनुष्यों का गुण है। भारत के लोग सत्य बोलें तो धर्म और इसी प्रकार से अन्य देश के लोगों पर भी यह लागू होता है। संसार में सभी स्थानों वा देशों में सत्य व्यवहार ही मान्य है। इससे यह ज्ञात होता है कि सत्य बोलना व व्यवहार में सत्य

का पालन व आचरण ही उचित व मान्य है। अतः सत्य धर्म का आवश्यक व प्रमुख अंग सिद्ध होता है। सत्य बोलना न हिन्दू धर्म, न ईसाई और न मुस्लिम धर्म अपितु यह सर्वमान्य व सार्वभौमिक अर्थात् संसार के सभी लोगों का धर्म है। इसे सत्य धर्म या मानव धर्म कह सकते हैं। संसार का कोई भी व्यक्ति सत्य इस लिए नहीं बोलता कि वह हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम व सिख आदि मत का अनुयायी है अपितु सत्य सार्वभौमिक धर्म होने से ही सर्वत्र सभी लोगों द्वारा इसका व्यवहार अनादि काल से किया जा रहा है।

धर्म का एक मुख्य व्यवहार ईश्वर की मनुष्यों पर अनेक कष्टों के कारण सभी मनुष्यों द्वारा उन कष्टों के लिए उसका धन्यवाद करना व कष्टज्ञ होना है। इसके लिए उपासना पद्धति की आवश्यकता होती है। उपासना के लिए हमें ईश्वर व अपनी आत्मा का स्वरूप निर्धारित करना व जानना भी आवश्यक है। ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप वैदिक मत में ही पाया जाता है। जिन दिनों वेदेतर मत व सम्प्रदाय अस्तित्व में आये, उन दिनों उन स्थानों पर अविद्या के कारण ईश्वर व जीवात्मा का स्वरूप किसी को विदित नहीं था। यदि होता तो फिर उनके बारे में पृथक, पृथक अपूर्ण व परस्पर विरोधी भी जानकारी प्रचलित व प्रसारित न होती। ईश्वर का स्वरूप कैसा है? इसका निर्धारण इस प्रकार कर सकते हैं कि जिसने इस संसार को बनाया है, इसे चला रहा है, जिसने इसे धारण व वश में कर रखा है तथा जो इसकी अवधि पूरी होने पर इसका प्रलय वा संहार करता है, उस सत्ता को ईश्वर कहते हैं। हम समझते हैं कि ईश्वर की इस परिभाषा से किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। अब यदि ईश्वर सृष्टिकर्ता है तो स्वाभाविक रूप से वह चेतन सत्ता होने के साथ

निराकार, सर्वव्यापक, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, सर्वशक्तिमान, आनन्दस्वरूप, जन्म व मरण से रहित अर्थात् अनादि, अजन्मा, अमर वा अविनाशी भी होगा। ईश्वर का धार्मिक अर्थात् दयालु, पक्षपातरहित, न्यायकारी, जीवात्मा को मनुष्य आदि योनियों में जन्म देने वाला, सभी कर्मों का साक्षी तथा कर्मफल प्रदाता होना भी आवश्यक है। इससे मिलते जुलते तथा अविरोधी सभी गुण ईश्वर के ज्ञात व सिद्ध होते हैं। इस ब्रह्माण्ड की विशालता को देखकर ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, अनादि, नित्य, अमर व अनन्त सिद्ध होता है। अब जीवात्मा की चर्चा करते हैं। मनुष्य व इतर सभी प्राणियों का अध्ययन करने पर सब प्राणियों के शरीरों में विद्यमान जीवात्मा सत्य, चित्त, सुख का आंकाक्षी, दुःख व दुःख के साधनों के प्रति उपेक्षा वा द्वेष भाव रखने वाला, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, अनादि, नित्य, कर्म फलों में फंसा हुआ तथा ईश्वर व माता-पिता द्वारा कर्म फलों के अनुसार मनुष्यादि अनेकानेक योनियों में जन्म लेने वाला सिद्ध होता है। मनुष्यों का धर्म क्या है, चिन्तन व विचार करने पर यह सिद्ध होता है कि ईश्वर व जीवात्मा को जानना, सही उपासना विधि, जो कि योगाभ्यास विधि ही है, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना तथा सभी मनुष्यों व अन्य योनियों के प्राणियों के प्रति दया, प्रेम, स्नेह, सहयोग आदि का व्यवहार करना ही मनुष्यों का धर्म सिद्ध होता है। क्या मनुष्य के पास कोई आदर्श आचार संहिता व धर्म अधर्म विषयक कोई ज्ञान उपलब्ध है, तो इसका विचार करने पर "वेद" ही वह ज्ञान सिद्ध होता है जो सभी मनुष्यों के लिए आचरणीय व पालनीय है। इस मान्यता के अनेक कारण हैं। यह मान्यता अन्य सभी मान्यताओं में सर्वाधिक निर्दोष एवं तर्क एवं युक्तियों से सिद्ध है। इसको जानने व समझने के लिए ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों का अध्ययन व ज्ञान आवश्यक है।

संसार में जो भी मनुष्य व महापुरुष उत्पन्न हुए व होते हैं, वह सब अल्पज्ञ होते हैं। वेदाध्ययन व योग साधना से मनुष्य अपने ज्ञान में वृद्धि कर योगी, मनीषी, ऋषि व महर्षि आदि के पदों पर आसीन हो

सकते हैं। जो मनुष्य योगी नहीं होगा और वेदों का सच्चा व यथार्थ ज्ञानी नहीं होगा, वह अवश्य भ्रमित होगा, निर्भ्रान्त कदापि नहीं हो सकता। यही कारण है कि हमें मत-मतान्तरों के ग्रन्थों में अज्ञान, परस्पर विरोधी बातें व विज्ञान विरुद्ध मान्यतायें प्राप्त होती हैं। सभी मत प्रायः एक दूसरे के विरुद्ध हैं जबकि एक ईश्वर और सब मनुष्यों का एक उद्देश्य एवं लक्ष्य होने के कारण उनका एक ही धर्म होना युक्तिसंगत सिद्ध होता है। अतः सभी मतों की शिक्षायें भी एक समान व अविरोधी होनी चाहिये। इनमें समानता न होना ही मत प्रवर्तकों की अल्पज्ञता व अविद्या को प्रस्तुत करता है। महर्षि दयानन्द ने इसका दिग्दर्शन अपने बनाये सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के ग्यारह, बारह, तेरह व चौदहवें समुल्लासों में कराया है। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द ने इस ग्रन्थ के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश के अन्तर्गत वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं को प्रस्तुत भी किया है। यह स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश ही वस्तुतः सभी मनुष्यों का सच्चा व एकमात्र सार्वभौमिक धर्म है। हम यह भी स्पष्ट कर दें कि पशु हिंसा व मांसाहार धर्म न होकर धर्म के विपरीत अधर्म वा पाप कर्म है जो ईश्वरीय व्यवस्था से दण्डनीय होता है। पशु हिंसा करना ईश्वर के काम में बाधा उत्पन्न करना है। बाधा इस प्रकार कि परमात्मा ने पशु व पक्षियों आदि को मनुष्यों की भांति ही उनके पूर्व जन्मों के पाप कर्मों के फल भोगने के लिए उत्पन्न किया है। मनुष्य इन पशुओं की हिंसा कर व मांसाहार कर ईश्वर के काम में बाधा बनते हैं, अतः ईश्वरीय व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करने का दण्ड तो ऐसे लोगों को मिलेगा ही। ईश्वर ने वेदों में यजमान के पशुओं की रक्षा करने का विधान किया है और इनकी हिंसा के लिए कठोर दण्ड का विधान भी किया है। हम अनुमान करते हैं कि राम, कृष्ण, युधिष्ठिर आदि वैदिक राजाओं के काल में पशुओं की हिंसा करने वालों को वेदानुसार कठोर दण्ड दिया जाता रहा होगा। परमात्मा ने मनुष्यों के भोजन के लिए अनेकानेक शाकाहारी स्वादिष्ट बल व शक्तिवर्धक पदार्थ बनाये हैं। उन्हीं का भक्षण

कर सभी मनुष्यों को सन्तुष्ट रहना चाहिये। मांसाहार करना ऐसा है जैसे स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना। ईश्वर ने जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र बनाया है। इसी कारण ईश्वर प्रेरणा तो सभी को करता है परन्तु रोकता किसी को नहीं है। संसार में जो दुःखी मनुष्य व इतर प्राणी देखे जाते हैं, वह इस बात का प्रमाण है कि यह अपने पूर्व जन्म व इस जन्म के बुरे कर्मों के कारण दुःखी है।

धर्म एक ही है, इसका यह प्रमाण भी है कि ईश्वर ने केवल एक वैदिक धर्म ही उत्पन्न किया था। सृष्टि के आरम्भ से महामारतकाल के 1.96 अरब वर्षों तक संसार में एक वैदिक ही विद्यमान रहा। कारण यह था कि सभी ऋषि-मुनि विद्वान् थे, अतः असत्य मत अस्तित्व में नहीं आ सकते थे। वेदेतर सभी मत व सम्प्रदाय मताचार्यों द्वारा मध्यकाल के अज्ञानता के युग में अपने अल्पज्ञान से बनाये हैं, इसी कारण उसमें अज्ञानता तथा मनुष्य के हित व अहित की बातें विद्यमान हैं। वेद ही एक मात्र ऐसे ग्रन्थ हैं जो ज्ञान व विज्ञान दोनों दृष्टियों से पूर्णतः निर्दोष हैं। इस कारण एकमात्र वेदधर्म ही सभी मनुष्यों का धर्म सिद्ध होता है। लेख समाप्ति पर यह भी उल्लेख कर दें कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य अम्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति

है। अम्युदय सांसारिक उन्नति को कहते हैं जैसा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, योगेश्वर श्री कृष्ण व महर्षि दयानन्द जी सहित ऋषियों का यश (अम्युदय) विद्यमान है। निःश्रेयस मोक्ष जन्म व मरण से 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों के लिए अवकाश को कहते हैं। इस अवधि में जीवात्मा दुःखों से सर्वथा पृथक् रहकर ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए सुख की चरमावस्था आनन्द का भोग करता है। मनुष्य जो भी अच्छे व बुरे कर्म करता है वह अपने जीवन व अपने प्रिय कुटुम्बियों व मित्रों को सुखी बनाने के लिए करता है। इस काम में वह भूल जाता है कि सुख प्राप्ति के लिए वह जो अशुद्ध व भ्रष्ट आचरण का सहारा लेता है वह ईश्वरीय व्यवस्था में दण्डनीय है। अविद्या से ग्रस्त नास्तिक लोग ही अशुभ कर्म कर पाप के बन्धन में फंसते हैं। अतः दुःखों से सर्वथा मुक्त होने का सत्य मार्ग केवल वैदिक धर्म की शरण में आने पर ही मिल सकता है। वेदों का अध्ययन व उसकी शिक्षाओं का आचरण ही संसार के सभी मनुष्यों का साझा धर्म है। विवेक बुद्धि से इसे समझने का प्रयत्न करना चाहिये। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं।

पता: 196 चुकखूवाला-2 देहरादून-243001

“मैं बढ़ता रहूँगा”

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

मार्ग सुगम नहीं
मंजिल कठिन सही
पैरों में छाले हैं
और कुछ डर भी है
किन्तु मैं चींटी से
गया गुजरा तो नहीं
इंसान हूँ।
कोशिश करके पहाड़
चढ़ जाती है चींटी
मैं तो मनुष्य हूँ
अपने होने की लाज तो
रखना ही है मुझे
मैं धीरे-धीरे ही सही

लेकिन जारी रखूँगा प्रयास
और एक दिन
तय करके रहूँगा मार्ग
की सारी बाधाएँ
और पहुँच कर रहूँगा
मंजिल पर।
जिसे न मिली बाधा
व्यर्थ उसका जीवन आधा
मुझे तो पूर्ण सफल करना है
हर बाधा का मरण करना है
मैं बढ़ता रहूँगा
शरीर में प्राण रहने तक।

पाटली कालोनी, भूत नगर, चन्दनगौव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००९

सामयिक

ग्रीष्म

‘आदान काल’ की चरम सीमा होती है याने इस काल में सूर्य पूरी तेजी पर होता है और उसकी प्रचण्ड किरणें संसार के जलीय अंश का शोषण करती है। जिससे नदी, तालाब, झील का पानी सूख जाता है, वृक्षों की हरियाली नष्ट होती है और प्राणियों के शरीर का जलीयांश भी कम होता है जिससे प्यास का अनुभव होता है, इस ऋतु में दो बातों का ख्याल सबसे ज्यादा रखना स्वास्थ्य-रक्षा के लिए जरूरी होता है। पहली बात, किसी भी कारण से शरीर में जलीयांश की कमी (Dehydration) नहीं होने पाये और दूसरी बात, पेट खराब न हो याने अपच और कब्ज की स्थिति न बनने पाये।

आहार - ग्रीष्म ऋतु में हमें ऐसा आहार करना चाहिए जिसमें मीठे (मधुर रस), शीतल प्रकृति के, चिकनाई वाले (स्निग्ध), रसीले पदार्थों को शामिल किया गया हो। मौसमी फलों का यथाशक्ति सेवन करना हितकारी होगा। नमकीन, खटाईयुक्त, कटु रस वाले तथा गरम प्रकृति के पदार्थ, तले हुए और तेज मिर्च मसाले वाले पदार्थ का सेवन जितना कम करें उतना अच्छा है। जो लोग धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार और मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं उन्हें ग्रीष्म ऋतु में कई प्रकार के कष्ट और रोग हुआ करते हैं। आप इन सबके सेवन से हमेशा दूर ही रहें। भोजन में हलके और सुपाच्य पदार्थों का ही सेवन करें। शाम के भोजन में दही, केला, बेसन की चीजे, अरबी, बेगन और तले पदार्थों का सेवन न करें। सम्भव हो सके तो रात को सोने से आधा घण्टा पहले, जबकि शाम का खाना खाये दो घण्टे हो चुके हों, एक गिलास दूध और १-२ चम्मच शुद्ध घी का सेवन करना चाहिए। इसके बाद कुल्ले करके मुंह साफ कर लें और आधा घण्टा कुछ काम या पढ़ाई लिखाई करें फिर सो जाएं। इन दिनों एसिडिटी (अम्लता) या हायपरएसिडिटी

ग्रीष्म

ऋतु चर्या

- स्व. रसवैद्य डॉ. प्रेमदत्त पाण्डेय,
सम्पादक निरोगधाम,
जवारा कम्पाउण्ड, इंदौर, (म.प्र.)

(अम्लपित्त) पेट में जलन, पेशाब में जलन, खूनी पेचिस, मुंह में छाले, कब्ज होना आदि व्याधियाँ गलत ढंग से आहार करने की वजह से ही होती है। ऐसी स्थिति में हो तो शाम के भोजन में कुछ दिन तक चावल एवं मूंग की दाल की खिचड़ी का ही सेवन

करना चाहिए। भोजन के बाद दिन में एक बार Dumex कम्पनी का बना Becosule Capsule १५ दिन तक सेवन करें। दोनों वक्त के भोजन के बाद दो चम्मच झण्डू पंचारिष्ट समभाग पानी में मिला कर पीयें। प्रत्येक कौर खूब अच्छी तरह चबा कर ही निगला करें। चाय, सिगरेट, तम्बाकू खाने वालों को ऐसी शिकायतें अक्सर हुआ करती है। आप इनका सेवन करना शुरू ही न करें तो जीवन भर इनके जहरीले प्रभाव से बचे रहेंगे। दिन में घण्टे-घण्टे या आधा घण्टे से १-१ गिलास मीठा नीबू पानी (शिकंजी) या कोई मीठा शरबत पीना चाहिए। एक गिलास ठण्डे पानी में जरा सी ग्लूकोज घोल कर पीने से घबराहट कम होती है और शरीर में चुस्ती फुर्ती मालूम होती है। सत्तू को मीठा और पतला करके सेवन करना भी हितकारी होता है। दोपहर बाद फलों में पके तरबूज, खरबूजा, सन्तरा, हरी नरम ककड़ी, केला आदि कोई भी एक मौसमी फल जरूर खाना चाहिए। फ्रीज में रखा पानी पीने की आदत न डालें। पीना चाहें तो थोड़ी देर तक बाहर रख कर उसकी ठण्डक कम करके पिया करें। फ्रीज का पानी पीने से गले में खराश, टांसिल्लिस में दर्द, सर्दी, जुकाम और अपच होने की शिकायतें होती है। मटके या सुराही का पानी पीना ही श्रेष्ठ है।

ग्रीष्म ऋतु में उड़द की दाल सरसो का साग, सरसों का तेल, खट्टा खासा दही, लहसून, शहद, बेसन के पदार्थ और ज्यादा उष्ण प्रकृति के पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। कच्चा नारियल और इसका पानी, सौंफ, मिश्री मक्खन आदि सेवन करना हितकारी होता है।

ग्रीष्म ऋतु में भूख से एक रोटी कम ही खाना अच्छा होता है ज्यादा खाना नहीं, इसलिए इन दिनों अधिक मात्रा में भोजन न करना ही अकलमन्दी है। कम खाएँ लेकिन खूब चबाकर खायें तो ज्यादा गुणकारी होता है। ज्यादा मात्रा में खाकर हजम न कर पाने से, थोड़ी मात्रा में खाकर अच्छी तरह हजम कर लेना अच्छा होता है। भोजन के अन्त में एक डकार आती है। यह डकार आते ही भोजन बन्द कर देना चाहिए। डकारते जाना और खाते जाना उचित नहीं। एक मोटा सिद्धान्त याद रखें कि कम खाना और गम खाना स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले काम है। गर्मी के दिनों में सुबह उठ कर दांत मुंह साफ कर शौच जाने से पहले ठण्डा पानी पीना और रात को सोते समय मीठा दूध पीना हितकारी होता है। हो सके तो सुबह के पानी में नींबू निचोड़ कर और रात के दूध में १-२ चम्मच घी डाल कर सेवन करना चाहिए। यह उपाय कब्ज और पेट में बढ़ी हुई गर्मी नष्ट करता है।

विहार - इन दिनों तेज, धूप, गरम हवा और ज्यादा गरमी से बचाव करना चाहिए। घर से बाहर निकलें तो एक गिलास ठण्डा पानी पी कर निकले और सिर को तेज धूप से बचाने का उपाय करके निकलें ऐसा करने से लू नहीं लगती। इन दिनों यात्रा करना हो तो २-४ बताशे और देहरादून वाली अमृतधारा या इन्दौर वाली प्राण सुधा साथ रखें। कभी जी मचलाए, उल्टी जैसा जी करे, सिर दर्द हो तो २-४ बूंद दवा बताशे पर टपका कर खा लेने से तुरन्त आराम होता है। रात अगर देर तक जागना पड़े तो दस बजे के बाद हर घण्टे से १-१ गिलास पानी पीना चाहिए। इससे वात और पित्त कुपित नहीं हो पाते। बाहर से घर लौटने पर थोड़ी देर विश्राम करके

पानी पीना चाहिए। लेकिन ग्रीष्म ऋतु में विशेषकर प्यास के वेग रोकना नहीं चाहिए। **शोषांग सादबा बाधिर्य सम्मोह भ्रम हृदयगदाः-** के अनुसार प्यास के वेग को रोकने याने पानी न पीने से मुंह सूखना, अंगों में शिथिलता, बहरापन, मूर्च्छा जैसी आना, चक्कर आना और हृदय को पीड़ा होना आदि परिणाम होते हैं।

इन दिनों सुबह जल्दी उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर विद्या अध्ययन करना और सूर्योदय से पहले थोड़ी दूर तक दौड़ना या टहलना चाहिए। स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला यह बेजोड़ और मुफ्त का उपाय है। सुबह सूर्योदय से पहले वायुमण्डल शान्त, शुद्ध, निर्विकार और प्राणवायुयुक्त होता है। इस वक्त वायु सेवन करने से हमारे फेफड़े शुद्ध और बलवान रहते हैं जिससे फिर दिन भर के दूषित और विषाक्त वायु मण्डल का हमारे फेफड़ों पर असर नहीं हो पाता और हम दिन भर चुस्त-दुरुस्त तथा फुर्तीले बने रहते हैं। ख्याल रहे, इस नियम का पालन करने में आलस्य व लापरवाही कदापि न करें। याद रखें, सुबह जल्दी उठना ताप है और रात को देर तक जागना ताप है। ग्रीष्म काल में प्रातः स्नान के बाद ही योगासन या हलका व्यायाम करें। दौड़ने कूदने और झटके से उठने बैठने वाले व्यायाम करते समय जांघिया या लंगोट पहनना चाहिए ताकि अण्डकोष (Scrotum) को झटका न लगे। व्यायाम हलका और कम मात्रा में ही करें जरूर। योगासन या व्यायाम करना शरीर को मजबूत और स्वस्थ रखने वाला मुफ्त का उपाय है।

अग्निदूत
हिन्दी मासिक पत्रिका

सदस्यता
अभियान में
सहयोग करें।

- ☞ समाज-सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और आर्य-समाज ने जो कार्य किया उसके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। उस कार्य से देश को जो लाभ हुआ उसके लिए हम सब स्वामी दयानन्द के ऋणी हैं।
- ☞ देश भर के लिए सामान्य भाषा की आवश्यकता स्वामी दयानन्द ने महसूस की और हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा अथवा आर्यभाषा होने के योग्य माना।
- ☞ यह देख कर आश्चर्य होता है कि विदेशी शासन के विरोध में सक्रिय संघर्ष के समय जिन बातों पर महात्मा गांधी ने अधिक बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य की संज्ञा दी प्रायः सभी स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम में पचास वर्ष पूर्व ही शामिल थे।

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, भारत के प्रथम महामहिम राष्ट्रपति)

हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान-गाथा

• विश्वनाथ •

सन् १९२३ में मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक उन्नीसवीं सदी का महर्षि प्रकाशित हुई। यह पुस्तक महर्षि दयानन्द का बहुत धिनौना तथा अपमानजनक चित्रण था। उन्हीं दिनों मुसलमानों ने श्रीकृष्ण महाराज के सम्बन्ध में भी एक आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की। पुस्तक का नाम था “कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी।” पुस्तक के नाम से ही समझ सकते हैं कि इसमें क्या था। महाशय, राजपाल, महर्षि दयानन्द और योगेश्वर कृष्ण का अपमान नहीं सकते थे। उन्होंने पुस्तक का उत्तर से देना उचित जाना। इन धिनौनी पुस्तकों का उत्तर देने के लिए १९२४ में ‘रंगीला रसूल’ प्रकाशित की।

यह पुस्तक उर्दू में थी जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी, परन्तु घटनाएँ सभी इतिहास-संमत और प्रामाणिक थीं। पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर ‘दूध का दूध और पानी का पानी’ छपा था। वास्तव में पुस्तक के लेखक पं. चमूपति एम.ए. थे जो आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् एवं बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बने थे। वे महाशय राजपाल जी के अभिन्न मित्र थे, उनकी अनेक पुस्तकें राजपाल जी प्रकाशित कर चुके थे। मुसलमानों की ओर से सम्भावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक पर अपना नाम नहीं देना चाहते थे। उन्होंने महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिये कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न बने वे किसी को भी इस पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बताएँगे। महाशय राजपाल जी ने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की। चमूपति जी पर जरा भी आँच नहीं आने दी।

सन् १९२४ में यह मुकदमा शुरू हुआ और सन् १९२९ में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पाँच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। यह



बात उस जमाने के प्रमुख मुस्लिम दैनिक-पत्र जमींदार में प्रकाशित हुई परन्तु महाशय राजपाल जी ने एक ही बात दोहराई कि इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी मेरी ही है, अन्य किसी को नहीं। उन्होंने जो वचन दिया उसे अन्त तक निभाया। पुस्तक बिकती रही परन्तु उसके विरुद्ध कोई शोर न मचा। फिर हुतात्मा गांधी ने अपनी मुस्लिम-परस्त नीति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लम्बी टिप्पणी लिख दी। बस फिर क्या था, एक ओर कट्टरवादी मुसलमानों और मुल्लों ने राजपाल जी के विरुद्ध आंदोलन छेड़

दिया, दूसरी ओर सरकार ने उसके विरुद्ध सन् १९२३ में १५३(अ) धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चलता रहा। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्र रुपये जुर्माने का दण्ड सुनाया गया। इस आदेश के विरुद्ध सेशन में अपील करने पर कारावास के दण्ड में एक वर्ष की कटौती कर दी गई। इसके पश्चात् अभियोग हाईकोर्ट में गया। हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश कुंवर दिलीपसिंह ने महाशय राजपाल को ससम्मान दोषमुक्त कर दिया।

पहला प्रहार

मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे और उन्होंने राजपाल जी के विरुद्ध जानलेवा आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरूप २६ सितम्बर १९२७ को उन पर खुदाबख्श नामक एक मुसलमान ने उनकी दुकान पर जो हस्पताल रोड पर स्थित थी, प्राणघातक आक्रमण किया। आक्रमणकारी एक पहलवान था। उसके हाथ से महाशय राजपाल के जीवन की सुरक्षा की कोई आशा न थी। परन्तु मारने वाले से बचाने वाला महाबली होता है, यह लोकोक्ति इस प्रसंग में सत्य सिद्ध हुई और स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज और स्वामी वेदानन्द जी जो दैवयोग से वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने घातक को ऐसा कसकर

दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। तथापि महाशय राजपाल बहुत बुरी तरह घायल हुए। घातक के विरुद्ध अभियोग चला और उसे सात वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

स्वामी सत्यानन्द जी पर आक्रमण

महाशय राजपाल अपने धावों के कारण अस्पताल में ही थे कि उसी दुकान पर जिसमें महाशय राजपाल जी को घायल किया गया था, स्वामी सत्यानन्द जी बैठे थे। रविवार, ८ अक्टूबर १९२७ को अब्दुल अजीज नामक एक मुसलमान ने उन्हें महाशय राजपाल समझ कर पीछे से, एक हाथ से चाकू व दूसरे हाथ में उस्तरे से प्राणघातक प्रहार कर दिया। घातक स्वामी जी घायल करके भागना ही चाहता था कि अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए पड़ोसी दुकान वाले महाशय नानकचन्द जी कपूर ने हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गए। उनकी पकड़ से घातक निकलना ही चाहता था कि महाशय नानकचन्द जी के छोटे भाई लाला चूनीलाल जी उस पर लपके और उसे पकड़ने का यत्न किया। उन्हें भी घायल करता हुआ हत्यारा भाग लिया परन्तु चौक अनारकली में उसे दबोच लिया गया। उसे चौदह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड और तदनन्तर तीन वर्ष के लिए शान्ति की गारण्टी का दण्ड सुनाया गया।

अंतिम प्रहार :-

महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गए हुए थे। वहाँ से पांच अप्रैल को लाहौर लौटे। ६ अप्रैल १९२९, शनिवार के दिन दोपहर के समय वे अपनी दुकान में आराम कर रहे थे। उनका एक कर्मचारी पुस्तकों को व्यवस्था से रख रहा था। इल्मदीन नामक एक मुसलमान युवक छुरा छिपाए हुए दुकान के भीतर आया। क्रूर हत्यारे ने आते ही लेटे हुए महाशय राजपाल जी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। वीर राजपाल जी का तत्काल प्राणान्त हो गया। हत्यारा अपनी जान बचाने के लिए बाहर भागा। महाशय जी का कर्मचारी भी शोर मचाता हुआ उसके पीछे दौड़ा। क्रूर हत्यारा भागकर महाशय सीताराम जी के लकड़ीटाल में जा घुसा। सीताराम जी के नवयुवक साहसी सपूत विद्यारत्न जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में पकड़ लिया। इतिहास ने अपने आपको आज पुनः दोहराया। दिल्ली में अब्दुल रशीद ने

वयोवृद्ध रुग्ण संन्यासी श्रद्धानन्द पर तीन गोलियाँ चलाकर भागने का प्रयत्न किया तो वीर धर्मपाल विद्यालंकार ने वहीं उसको धर दबोचा था जब तक पुलिस ने आकर उसको बन्दी न बना लिया।

अंतिम यात्रा :-

महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सायंकाल हो गया था परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया था कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाए। पुलिस के मुसलमान अधिकारियों ने राज्याधिकारियों के मन में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि यदि शवयात्रा निकली तो शहर में दंगा-फसाद हो जाएगा। डिप्टी कमिश्नर ने रातों-रात लाहौर में धारा १४४ लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलसे-जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

शवयात्रा कैसी थी -

महाशय जी के बलिदान से आर्य हिन्दू-जाति में ऐसा जोश पैदा हुआ जो देखते ही बनता था। शवयात्रा के समय यह जोश देखकर सब में उत्साह का संचार हो रहा था। अनुमान लगाया गया कि पच्चीस हजार लोग शव-यात्रा में सम्मिलित होकर शमशान-भूमि पहुंचे थे। हिन्दुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों की छतों से हुतात्मा के शव पर पुष्प-वर्षा की। पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि, महाशय नानकचन्द जी नाज ने तब एक कविता लिखी थी जिसकी ये पंक्तियाँ उस समय के जोश का यथार्थ चित्रण करती हैं :

फ़स्त से सर ऊँचे आस्माँ तक हो गए,
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।
फूल बरसाए शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब,
देवताओं ने तेरी जय जय बुलाई राजपाल।
हो हर एक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब,
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।
तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजे लानतें,
जब मुजम्मद कर रही है इक खुदाई राजपाल।
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे,
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।
सौजन्य : राजपाल एण्ड सन्स, १५९०, मदरसा रोड,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५९९९८३, ९४२५५९५३३६



के समान होती है।

६. यकृत (लीवर) का कैंसर :

हिपेटोकार्सिनोमा और वसा,

कोशिकाओं का कैंसर लिपोसार्कोमा कहलाता है।

लक्षण :- द्यूमर, खून बहना, दर्द, अल्सर का निर्माण, आसपास के ऊतकों में संपीड़न की वजह से पीलिया जैसे लक्षण हो सकते हैं, आँखों और त्वचा का पीलापन, लसिका का बढ़ जाना, खाँसी और लीवर का आकार में बढ़ना, हड्डी में दर्द, अस्थियों का टूटना आदि। वजट घटना, भूख में कमी, थकान, अत्यधिक पसीना आना, रात को अधिक पसीना आना, रक्ताल्पता, थेम्बोसिस हार्मोन परिवर्तन, पित्ताशय के स्थान पर दर्द व सूजन।

कैंसर पैदा करने वाले कारण :- इस रोग की उत्पत्ति शारीरिक तथा मानसिक कारणों से होती है। उदाहरणार्थ, शराब, सिगरेट पीने, तम्बाखू खाने तथा पान खाने, किसी जगह गहरी चोट लगने से कैंसर हो सकता है, ये सब शारीरिक कारण हैं। इसी प्रकार शोक, दुःख, चिन्ता, काम धंधे में हानि आदि मानसिक कारणों से यह रोग हो सकता है। इस युग में ये कारण बढ़ते जा रहे हैं, इसलिए यह इस युग का रोग भी कहा जा सकता है। यह रोग वंशानुगत भी हो सकता है। बीसवीं शताब्दी में इस रोग ने इतना उग्र रूप धारण कर लिया है कि लगभग १५ प्रतिशत व्यक्तियों की मृत्यु कैंसर से होती है।

उपचार :- ब्रेन द्यूमर, मुख का कैंसर, स्तन, (ब्रेस्ट) युटस (गर्भाशय), गुर्दा कैंसर, छाती का कैंसर, गले का कैंसर, पेट का कैंसर का इलाज कर सफलता पायी है तथा होमियोपैथी पद्धति द्वारा कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

कैंसर के दुष्प्रभावों पर नियंत्रण :- कैंसर रोगों में होमियोपैथी उपचार असरदायक है, इसके उपचार से रोगी

कैंसर- कैंसर रोगों का एक वर्ग है, जिसमें

कोशिकाओं का एक समूह अनियंत्रित वृद्धि, रोग आक्रमण और कभी-कभी नासिका या रक्त के माध्यम से शरीर के अन्य भागों में फैल जाता है। अधिकांश कैंसर एक गाँठ या अबुंद (द्यूमर) बनाते हैं, लेकिन कुछ जैसे रक्त कैंसर (ल्यूकेमिया) गाँठ नहीं बनाता है। चिकित्सा की वह शाखा जो कैंसर के अध्ययन, निदान, उपचार और रोकथाम से संबंधित है, अन्कोलाजी या कैंसर विज्ञान कहलाती है।

कैंसर सभी लोगों को यहाँ तक कि भ्रूण को भी प्रभावित कर सकता है। कैंसर द्यूमर का बढ़ना जारी रहता है, किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता और जब रोग का पता चल जाता है तो पाण बचाना भी मुश्किल हो जाता है, इस बीमारी का नाम सुनकर रोगी भयभीत हो जाता है। यदि कैंसर होने का पता शुरुआत में ही लग जाये तो रोगी को होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति से बचाया जा सकता है।

अधिकांश कैंसर रोगों का इलाज किया जा सकता है। यह कैंसर के विशेष प्रकार, स्थिति और अवस्था पर निर्भर करता है एक बार लक्षणों द्वारा निदान हो जाने पर कैंसर का उपचार होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति के द्वारा रोगी को ठीक किया जा सकता है।

कैंसर के प्रकार :-

१. कर्सिनोमा : स्तन, प्रोस्टेट, फेफड़े और बड़ी आंत का कैंसर हो जाना।
२. सार्कोमा : संयोजी ऊतक या मध्योतक कोशिकाओं से व्युत्पन्न दुर्दम गाँठ।
३. लिंकोमा और रक्त कैंसर (ल्यूकेमिया) : रक्त बनाने वाली कोशिकाओं से उत्पन्न होती है।
४. जनन कोशिका गाँठ : व्यस्कों में अक्सर शुक्रग्रन्थि और अण्डाशय में पाया जाता है। भ्रूण बच्चों और छोटे बच्चों में पाया जाता है।
५. ब्लास्टोमा : जो एक अपरिपक्व या भ्रूणीय ऊतक

को आराम मिलता है तथा तनाव, अवसाद, बेचैनी का सामना करने में मदद करता है। अन्य लक्षणों में उल्टी, मुंह के छाले, बालों का झड़ना, अवसाद और कमजोरी जैसे दुष्प्रभावों को घटाता है। ये औषधियाँ दर्द को कम करती हैं, उत्साह बढ़ाती हैं और तन्दुरुस्ती का बोध कराती हैं, कैंसर के प्रसार को नियंत्रित करती हैं और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती हैं। अनेक प्रकार के कैंसर जैसे गाल, जीभ, भोजन नली, पाचक ग्रन्थि, मलाशय, अण्डाशय, गर्भाशय, मूत्राशय, ब्रेस्ट और प्रोस्टेट ग्रन्थि के कैंसर में कारगर एवं उपयोगी पाई गयी है। चूंकि होमियोपैथी उपचार चिकित्सा का संपूर्ण तंत्र है। यह तंत्र केवल अकेली बीमारी को नहीं बल्कि व्यक्ति को संपूर्ण रूप से देखता है। ये औषधियाँ सुरक्षित मानी गयी हैं।

कैंसर के उपचार के लिए वनस्पति, जानवर, खनिज पदार्थ और धातुओं से प्राप्त लगभग २०० से अधिक होमियोपैथी औषधियाँ उपयोग में लाई जाती हैं। जैसे - एनाकारडियम, एसिनम, जबोराण्डी, एम्मोमिआकार्व, अस्टाकस, हेलोडर्मा, ग्रिन्डेलिया, सोरिनम आदि।
प्रमुख होमियो औषधियाँ :- कैलकैपलोर, हाईड्रेस्टिस, फाइटोलैम्का, आर्स, आयोड, कासिनोसीन, कोनायम, एसिड, नाइट्रिक, सेम्पर वाइनम, अनिथोगैलम, कार्बोएनि,

होआंगनन आदि औषधियाँ लक्षण के अनुसार प्रयोग में लायी जा सकती हैं।

होमियोपैथी का प्राण सूक्ष्म और शक्तिकृत है। अतः चिकित्सक को बीमारी के मूल कारणों को खोजकर संपूर्ण लक्षणों को मिलान कर चुनी हुई शक्तिकृत औषधि का प्रयोग करने से कोई भी जटिल से जटिल रोगों पर नियंत्रण एवं सफलता पायी जा सकती है।

भोजन तथा परहेज :- पथ्य : कैंसर से पीड़ित व्यक्ति को नीबू के रस से बनी शिंकजी बनाकर पीने, फलों का रस, कच्ची और हरी सब्जियाँ, टमाटर का रस, तरबूज, करेला, गाजर, अंगूर, केला, पालक, बन्द गोभी, किशमिश, सूखा मेवा, बादाम आदि के प्रयोग से कैंसर होने की संभावना कम रहती है।

अपथ्य :- संगृहित चीजें जैसे - प्याज, लहसून, लौंग, इलायची, चाय, कॉफी, कपूर, मसाले वाली व नशीली चीजें, नमक वसायुक्त चीजें, दूध, माँस व मछली, अण्डा, पनीर, डालडा, शराब और तम्बाखू आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारतमाता स्कूल के सामने, टाटीबंद, रायपुर (छ.ग.)

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में उपदेशक महाविद्यालय विभाग का शुभारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम होशंगाबाद में पूज्य आचार्य सत्यसिन्धु आर्य (प्रधानाचार्य गुरुकुल) के जन्मोत्सवस्वर्णजयन्ती समारोह के अवसर पर दि. १० जून १७ से उपदेशक महाविद्यालय विभाग का शुभारम्भ किया जा रहा है। प्रवेशार्थी युवक निम्न चलभाष पर संपर्क कर सकते हैं। दूरभाष क्र. ९४२४४७१२८८, ९९०७०५६७२६। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आर्य जगत् के लिए उपदेशक व प्रचारक तैयार करना है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम दशमी कक्षा उत्तीर्ण, कम से कम १८ वर्ष के साथ लग्नशील चरित्रवान युवा अपेक्षित है। यह पाठ्यक्रम त्रिवर्षीय है। इसमें निम्न उपाधियाँ दी जायेंगी - (१) सिद्धान्तप्रवेशकः, (२) सिद्धान्ताधिकारी, (३) सिद्धान्तभास्कर, (४) सिद्धान्तप्रभाकर, (५) सिद्धान्तवाचस्पति, (६) सिद्धान्तमार्तण्ड। प्रत्येक छः छः मास में लिखित व मौखिक परीक्षा लेकर क्रमशः उपर्युक्त उपाधियों के साथ प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

भावत्क : आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

आर्यसमाज बिलासपुर का वेद महोत्सव एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ सोल्लास सम्पन्न

बिलासपुर। आर्यसमाज गोंडपारा बिलासपुर का ८९वाँ वार्षिकोत्सव वेद महोत्सव एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ के साथ पं. देवकीनंदन दीक्षित सभा भवन लाल बहादुर शास्त्री विद्यालय प्रांगण बिलासपुर में १३ से १५ जनवरी २०१७ के मध्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। शुभारम्भ १३ जनवरी को प्रातः ८ बजे वैदिक के साथ हुआ। आर्यसमाज बिलासपुर के उपप्रधान श्री सुधीर कुमार आर्य धर्मपत्नी श्रीमती सीमा आर्य महायज्ञ के मुख्य यजमान रहे। समाज के पुरोहित श्री जयदेव शास्त्री ने यज्ञ की महत्ता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कुशलतापूर्वक यज्ञ संपादित कराया। यज्ञ पश्चात् कार्यक्रम स्थल से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जो नगर के हृदय स्थल गोल बाजार, सदर बाजार, रिन्हर व्यू रोड होते हुए आर्यसमाज मंदिर में विसर्जित हुई। कार्यक्रम स्थल सहित अनेक चौक-चौराहों में गुरुकुल आश्रम आमसेना उड़ीसा के आर्य वीरों ने अपने शौर्य, पराक्रम एवं व्यायाम प्रदर्शन से दर्शकों को आश्चर्य चकित कर दिया। वेद महोत्सव के मुख्य वक्ता स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य रथ में विराजमान शोभा यात्रा के आकर्षण के केन्द्र थे। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, मुख्य अधिष्ठाता श्री दिलीप आर्य, दयानन्द विद्याल के छात्र-छात्रा, अध्यापिका, आर्यसमाज के पदाधिकारी, सदस्य, परिजन सहित बिलासपुर वासियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सायंकालीन कार्यक्रम शाम ५ बजे शुरू होने से पूर्व सभा भवन में प्रोजेक्टर पर ज्ञान वर्धक एवं प्रेरणास्पद फिल्म प्रदर्शित किया गया, तत्पश्चात् हरियाणा से पधारे वैदिक भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य एवं मंडली द्वारा संगीतमय भजनों की मनोरम प्रस्तुति की गई। भजन पश्चात् खुशहाल परिवार, समाज एवं राष्ट्र का निर्माण कैसे हो विषय पर ओजस्वी वक्ता स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज का

व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रातः ८ से ९ यज्ञ, ९ से ११ बजे तक वेदों में राष्ट्रीयता और राष्ट्र भक्ति तथा सायं ५ से ८ बजे तक धर्म एवं धर्म निरपेक्षता विषय पर भजन संगीत एवं विद्वानों के व्याख्यान हुए।

कार्यक्रम के आखिरी दिन १५ जनवरी को प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ एवं पूर्णाहुति हुई। प्रसाद पश्चात् वेदों में ईश्वर, देवी-देवता, भगवान आदि में क्या अंतर है और किसकी उपासना करनी चाहिए? विषय पर व्याख्यान का आयोजन हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित नगर के महापौर श्री किशोर राय जी ने अपने उद्बोधन में स्वामी जी के आगमन एवं वेद महोत्सव के आयोजन को बिलासपुर वासियों सहित अपना सौभाग्य बताया तथा उत्कृष्ट आयोजन के लिए आर्य समाज को बधाई दी। समाज के संरक्षक श्री सुभाष बत्रा एवं उपप्रधान श्री ज्योतिर्मय आर्य ने विद्वानों का सम्मान किया।

मंत्री सुदर्शन जायसवाल धन्यवाद ज्ञापन के साथ उपस्थित लोगों को आर्यसमाज से जुड़ने का आह्वान करते हुए आर्यसमाज मंदिर में रखे ऋषि लंगर के लिए सभी को आमंत्रित किया। शांतिपाठ एवं वैदिक उद्घोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

गुरुकुल में प्रवेश

मध्यप्रदेश के जनपद गुना शहर में आर्यज्ञानज्योतिर्गुरुकुलम् में सत्र २०१७-१८ के लिए प्रवेश प्रारम्भ है। इच्छुक विद्यार्थी एवं अभिभावक शीघ्र सम्पर्क करें।

संपर्क नं. : ९१११०१९९४४, ९५८२१०४६१

आचार्य भद्रकाम वर्णी “ब्रह्मचारी राजसिंह स्मृति सम्मान-२०१७” से सम्मानित

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित १५वें आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर १२ मार्च २०१७ को “ब्रह्मचारी राजसिंह स्मृति सम्मान-२०१७” से आचार्य भद्रकाम वर्णी जी को सम्मानित किया गया है। यह सम्मान दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आचार्य भद्रकाम वर्णी जी द्वारा आर्यसमाज, गुरुकुल, वेद विचार पत्रिका, वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर आदि के माध्यम से आर्यसमाज वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार करने हेतु तथा समाज सेवा व राष्ट्र सेवा हेतु किया गया है। इनके सम्मान में एक प्रशस्ति पत्र तथा ५१००० रुपये का चेक प्रदान किया गया है।

यह सम्मान ब्र. राजसिंह आर्य जी के कार्यों को स्थायी बनाये रखने के लिये उन्हीं के जैसा आर्यसमाज वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में आजीवन ब्रह्मचारी रहकर योगदान करने वाले किसी एक वैदिक विद्वान् को प्रतिवर्ष दिया जाता है। इस वर्ष दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाले युवा वैदिक विद्वान् तपस्वी आचार्य भद्रकाम वर्णी जी को प्रदान किया गया है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के कार्यों, मान्यताओं, सिद्धान्तों को मजबूती के साथ जन-जन तक पहुंचाने तथा वैदिक धर्म को दृढ़ता के साथ प्रचारित करने की शक्ति एवं सामर्थ्य आचार्य भद्रकाम वर्णी जी को प्रदान करे, जिससे हम सब मिलकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को साकार कर सकें।

संवाददाता : बृजेश आर्य, पूर्व संचालक, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश

आर्यसमाज कांसा में होली मिलन सम्पन्न

कांसा। दिनांक १३ मार्च १७ को आर्यसमाज कांसा के तत्वावधान में गांव के पुराने मंदिर परिसर में वैदिक विधि से बड़ी धूमधाम से होली का पर्व मनाया गया। इस समारोह में पांच गांवों के लगभग २५० लोगों ने भाग लिया, जिसमें छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध तक सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम होली पर्व का सबसे प्रमुख कार्य नवसस्येष्टि यज्ञ किया। यज्ञ में सभी लोगों ने बारी बारी से नये अन्न की आहुति दी। पश्चात् ईश्वर भक्ति का भजन हुआ। भजन के बाद विभिन्न खेलों का आयोजन हुआ, जिसमें बच्चों के साथ बड़ों ने भी भाग लिया। खेलों में मुख्य रूप से बोरी दौड़, तीनटंगी दौड़, जलेबी दौड़, सूई धागा दौड़, फुगड़ी बच्चों के लिए हुआ तथा लाठी चाल, तलवार बाजी, लाठी खींचना, हंडी फोड़, रस्सा कस्सी बड़ों ने किया। अंत में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्या श्रीमती तुलसी देवी जी ने लोगों को होली का शुभसंदेश व बधाई दी तथा खेल में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त प्रतियोगियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया।

अन्न प्रासन्न संस्कार सम्पन्न

कांसा। हर्ष की बात है कि आत्मवीर आर्य धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीबाई की बेटी अदिति का अन्न प्रासन्न संस्कार स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती (करनाल हरियाणा) के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिवार एवं विद्यालय के २०० लोगों के साथ, स्वामी देवानन्द जी (राजस्थान), आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा), ब्र. बलदेव जी, श्री दिलीप आर्य सभा कार्यालय मंत्री आदि सबने बेटी को आशीर्वाद दिया।

संवाददाता : आचार्य रणवीर आर्य, आर्यसमाज कांसा



पाती परदेश की

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु ।

ध्यान, अध्यापन, शंका समाधान आदि के रूप में वैदिक धर्म प्रचारार्थ २१ जनवरी २०१७ को दुबई पहुंचा । यह मेरी २६वीं प्रचार यात्रा है । देश-विदेश, जहां कहीं पर भी जाता हूं, प्रायः सर्वत्र आर्य सज्जनों के द्वारा (विशेष कर युवक) एक प्रश्न प्रमुखता से उपस्थित किया जाता है कि सत्य सनातन, ईश्वरीय धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, आचार-विचार एवं आदर्श परम्पराओं का समाज राष्ट्र विश्व में प्रचार-प्रसार क्यों नहीं हो रहा है ? आज देश में हजारों की संख्या में आर्यसमाजें संध्या, सत्संग, स्वाध्याय, भजन, प्रवचन, कथा, शिविर, समारोह, उत्सव, संगोष्ठी आदि सम्पन्न होते हैं, इन सबसे व्यक्तिगत, पारिवारिक लाभ तो अवश्य होते हैं, किन्तु समाज, राष्ट्र के अन्य (वैदिक धर्म से अपरिचित) व्यक्तियों को इनसे लाभ नहीं होता है या अतिन्यून होता है । हम आर्यों का सब कुछ श्रेष्ठ महान्, आदर्श होते हुये भी हम बढ़ नहीं पा रहे हैं । लोग वैदिक धर्म की ओक आकृष्ट नहीं हो पा रहे हैं ।

वैदिक धर्म सार्वभौमिक, सर्वकालिक, सर्वजनीन होते हुये भी हम इसे फैला क्यों नहीं पा रहे हैं ? शास्त्रकार ऋषियों ने लिखा है कि “सत्यमेव जयते नानृतम्” किन्तु वर्तमान में तो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि सत्य, असत्य से पराजित हो रहा है, श्रेष्ठ, निकृष्ट से दब रहा है, उत्तम घटिया से पिछड़ रहा है, आदर्श, अनादर्श से अभिभूत हो रहा है । अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्त अब या तो पुस्तकों में ही शोभा दे रहे हैं या फिर मंच पर विद्वानों का प्रवचन का विषय रह गये हैं । सामान्य मनुष्यों की तो यह मानसिकता बन गयी है कि बिना झूठ, छल कपट, छद्म, अन्याय के तो जीवित रहना भी संभव नहीं है । समाज राष्ट्र में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि छल, कपटी, अन्यायी, शोषक, धूर्त-चालाक, छद्मी व्यक्ति बड़े ठाठ से, सुख सुविधा वाले साधनों के साथ गर्व के साथ जी रहे हैं और सत्यवादी, आदर्श, धर्मपारायण सज्जन लोगों

को अनेक प्रकार के अभावों, अन्यायों, अत्याचारों, बाधाओं कष्टों के कारण दुःखमय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है । इस स्थिति के कारण भी जन सामान्य में सत्य, धर्म, आदर्शों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो गई है ।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हमारे पास ईश्वर, ज्ञान, सिद्धान्त, कर्म, उपासना, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार आदि समस्त विषय का विज्ञान श्रेष्ठ होते हुये भी इसके प्रचार-प्रसार में जिस साधनों, सुविधाओं, बुद्धि, साहस बल, पराक्रम, त्याग, तप, लगन, सहशक्ति, धैर्य, निष्कामता की नितान्त अपेक्षा है, उनका अभाव है, न्यूनता है । मात्र धनैश्वर्य-सुख सुविधाओं के विपुल तथा उत्कृष्ट हो जाने से कोई नहीं बन जाता, जब तक समाज राष्ट्र विपन्न जन समुदाय के लिए उनका त्याग पूर्वक सदुपयोग न करे । बलिष्ठ, वीर्यवान् की संज्ञा वही प्राप्त करने का अधिकारी है, जो मात्र शक्ति, सौष्ठव, बृहदाकार का आधिक्य ही न रकता हो, बल्कि अपने बल, साहस, पराक्रम, उत्साह, प्रगल्भता का प्रयोग, निर्बल, प्रताड़ित, शोषित, अन्याय से ग्रस्त दुःखित व्यक्तियों की रक्षा के लिए करे । सच्चा विद्वान् वही है जो समाज राष्ट्र में प्रचलित अज्ञान, असत्य, पाखण्ड, अंधविश्वास को नष्ट करने के लिए साहस, निर्भीकता के साथ परम पुरुषार्थ करे, इस कार्य के करते हुये मृत्यु भी आ जावे तो घबराये नहीं ।

हमें यह बात अच्छी प्रकार से मन में रखनी चाहिए कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना केवल वहां जाकर व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन को श्रेष्ठ, उन्नत बनाने के लिए नहीं की है बल्कि इसके माध्यम से न केवल राष्ट्र बल्कि समस्त विश्व को भी श्रेष्ठ बनाने के लिए की है । साप्ताहिक सत्संग के कार्य तो हम घर पर भी करते हैं, करने चाहिए । समाजों में तो आर्य सभासदों को समाज, राष्ट्र में मांसाहार, मद्यपान, द्यूत, व्यभिचार, नास्तिकता, अंधविश्वास, पाखण्ड, रिश्वत, झूठ, छल, कपट, अन्याय, अथ्याचार जैसी बुराईयों को कैसे निर्मूल किया जाये और इसके लिए कौन, कितना किस प्रकार का तन-मन-धन-

समय-बुद्धि का पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास, निष्कामतापूर्वक सहयोग करेगा यह सब मिल बैठकर सुनिश्चित करना चाहिए। स्मरण रहे कि सत्य की, धर्म की, आदर्श की जीत, स्वतः नहीं होती, बल्कि उसे पूर्ण संगठित होकर, योजनाबद्ध रूप से पूर्ण-पुरुषार्थ-घोर तपस्या-आत्म विश्वास तथा ईश्वर की सहायता से जिताया जाता है।

हे देवाधिदेव महादेव ! हम वेदानुयायी, ऋषिभक्त, याज्ञिक, ध्यानी, स्वाध्यायशील, आचार्य, प्रचारक, अधिकारी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासी सभी आर्यों के समक्ष, ये अधर्मी, विधर्मी, कुधर्मी, दैत्य, पिशाच, असूर, नास्तिक अपने आतंक से समाज राष्ट्र विश्व को नरकमय बनाये जा रहे हैं और हम हाथ पर हाथ रखे, मूक बनकर,

मात्र मन मसोस कर, इनको निहार रहे हैं। कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। हे अन्तर्यामिन दयानिधान ! वेद ज्ञान को समग्र विश्व में प्रसारित प्रचारित करने हेतु हमें विपुल शक्ति, अदम्य-साहस, अटूट-विश्वास, अचल-पराक्रम, उत्कृष्ट-उत्साह प्रदान करो, जिससे हम मात्र घर या समाज मंदिर में, यज्ञ-संध्या-स्वाध्याय-सत्संग-भजन तक ही सन्तुष्ट न रहे बल्कि अत्यन्त साहसिक, विशिष्ट क्रान्तिकारी कार्यों का सम्पादन करें, यह उद्योग आपके सहाय के बिना असंभव है।

हमें पूर्ण विश्वास व आशा है कि आप शीघ्र, अवश्य ही हमारे में वीर्य-ओज-बल प्रदान करके, इन कार्यों के सम्पादन करने में हमें समर्थ बनायेगे। - **ज्ञानेश्वरायः**

महर्षि दयानन्द की जयन्ती हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

बालकोनगर (कोरबा)। आर्यसमाज बालकोनगर कोरबा एवं डी.ए.वी. उच्च. माध्य. विद्यालय बालकोनगर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २१ फरवरी १७ को वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द जी की जयन्ती बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के माध्यम से हुआ। यज्ञोपरान्त स्कूल के विद्यार्थियों ने महर्षि दयानन्द बनकर फैसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लिया एवं बालिकाओं ने भजन भी प्रस्तुत किया। यज्ञ का ब्रह्मत्व एवं मंच संचालन श्रीमती गीता आर्या द्वारा किया गया। श्री नागेश गौराहा जी (उपसचिव आर्य शिक्षा समिति) एवं प्रभात शुक्ला जी द्वारा भजन एवं आर्यसमाज के प्रधान श्री गोपीराम साहू जी द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् स्कूल के सभी विद्यार्थियों व आर्यसमाज के लोगों को प्रसाद में बूंदी एवं खिचड़ी का वितरण किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्कूल की प्रचार्या एस. एस. श्रीमाली, श्री देवनाथ साहू मंत्री आर्यसमाज, श्री हरनारायण साहू जी कोषाध्यक्ष आर्य शिक्षा समिति एवं विद्यालय के शिक्षकों का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में श्री बालमुकुन्द चन्द्र जी, श्री नेतराम चौहान जी, श्री साहू जी आदि की उपस्थिति भी रही।

संवाददाता : श्रीमती गीता आर्या, आर्यसमाज बालकोनगर कोरबा

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी की ओर से अन्न-वस्त्र सहयोग

जुनानी (हरिपुर)। नर सेवा ही नारायण सेवा है, इस कहावत को ध्यान में रखकर गुरुकुल हरिपुर, जुनानी समय-समय पर ओड़िशा एवं ओड़िशा से बाहर राज्यों में गरीबों, अनाथों, विधवाओं, विधुरों एवं दिव्यांग भाई-बहनों, माताओं एवं वृद्ध असहाय महानुभावों को अन्न वस्त्र सहयोग के रूप में प्रदान करते रहता है। इसी क्रम में १९-२० फरवरी १७ को नुआपाड़ा जिला के विभिन्न गांवों के ५०० परिवार को २५-२५ किलो चावल एवं एक-एक साड़ी प्रदान किया गया। ध्यान रहे ऐसे असहाय व्यक्तियों को सहयोग किया जाता जो वितरण केन्द्र तक चलकर आने में असमर्थ थे, वैसे असहाय लोगों को गुरुकुल की गाड़ी उनके घर जाकर उनको वितरण केन्द्र तक लाकर तथा उन्हें सहयोग देकर पुनः घर वापस छोड़ी। वितरण केन्द्रों में पहले वैदिक यज्ञ, प्रवचन तदुपरान्त सहयोग लेने आये हुए जनों को सहयोग प्रदान किया गया। कार्यक्रम में हुए सभई महानुभावों के लिये भोजन का उचित प्रबंध गुरुकुल की ओर से किया गया था। यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के हितैषी श्री विजय कुमार लाहोटी, रायपुर के प्रत्यक्ष उपस्थिति में गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के देख-रेख में गुरुकुल के आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु एवं श्री धर्मराज पुरुषार्थी के पुरुषार्थ से तथा स्थानीय महानुभावों के मेहनत से सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य गुरुकुल हरिपुर जुनानी



प्रवेश प्रारम्भ

सत्र 2017-18



छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित व (छ.ग. शासन विभाग से मान्यता प्राप्त-पंजी. 182057)

महर्षि दयानन्द आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम, जी.ई. रोड, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.) ४९२००१

हिन्दी माध्यम
कक्षा पहली से दसवीं कक्षा
ग्यारहवीं व बारहवीं
(गणित, जीव-विज्ञान, कॉमर्स, कला)

English Medium

Class : Nursery,
PP-I, PP-II,
Class STD 1st to STD 8th



हमारा संकल्प : शिक्षा के साथ-साथ वैदिक हवन, संस्कार, योग

विद्यालय पहुँच हेतु यातायात व्यवस्था
पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक छात्र-छात्रा के लिए



नोट : हिन्दी माध्यम कक्षा पहली में निःशुल्क प्रवेश (सीट सीमित)

पता : जी.ई. रोड, देना बैंक के पास, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

सम्पर्क : कार्यालय : 0771-2572013, प्राचार्य : 9179509030

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973



आत्मवीर आर्य की बेटी अदिति का अन्न प्राशन संस्कार के अवसर पर उपस्थित आचार्यगण



आर्यसमाज बाल्कोनगर कोरबा में महर्षि दयानन्द की जयन्ती के अवसर पर उद्बोधन देते हुए श्रीमती गीता आर्या



तुलाराम आर्य कन्या उच्च. माध्य. विद्यालय कूँरा में सम्पन्न गणतन्त्र दिवस की झलकियाँ



तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर छात्राओं का सम्मान करते हुए सभा के पदाधिकारी



दिल्ली में महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) के 94वें जन्म



दिवस के अवसर पर बधाई देते हुए सभा के पदाधिकारी



महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में नवसम्भवतसर के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सभा के पदाधिकारी व गणमान्य नागरिकजन





के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।



मसाले
असली मसाले
सच-सच



महाशिर्यो दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001